चौबीस ठाणा चर्चा

प्रस्तुति
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य
मुनि श्री प्रशान्तसागरजी महाराज

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
सागर (म. प्र.)

●

कृति

चौबीस ठाणा चर्चा

●

प्रस्तुति

मुनि श्री प्रशान्तसागरजी महाराज

●

संस्करण

तृतीय, जून 2009

●

आवृत्ति

1100

●

सहयोग राशि

20/-

●

प्राप्ति स्थान :

धर्मोदय साहित्य प्रकाशन

सागर (म. प्र.)

094249-51771

●

मुद्रक

विकास ऑफसेट, भोपाल

प्रकाशकीय

परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री प्रशान्तसागरजी महाराज ने चौबीस ठाणा चर्चा को विशेषताओं सहित प्रस्तुत किया है।

परम पूज्य मुनि श्री से मैंने कहा कि इतने अधिक जगह से चौबीस ठाणा प्रकाशित हुए हैं फिर आपने यह एक और क्यों तैयार कर दिया। तब मुनि श्री ने कहा–प्राय: जितने भी चौबीस ठाणा प्रकाशित हुए हैं, उनमें कुछ अशुद्धियाँ परम्परागत चली आ रही हैं। जैसे–सत्यमनोयोग, सत्यवचनयोग, अनुभय मनोयोग, अनुभय वचनयोग में, कार्मणकाययोग में एवं अनाहारक मार्गणा में तृतीय शुक्लध्यान लेते हैं। जबकि आगम में ऐसा वर्णित नहीं है तथा अनन्तानुबंधी चतुष्क कषाय में कषाय स्वकीय लेते हैं। वह भी आगमकथित नहीं है। इनका सम्यक् व्याख्यान क्या होगा, यह इस चौबीस ठाणा में लिखा गया है और जहाँ–जहाँ आवश्यकता थी, वहाँ–वहाँ फुटनोट पर विशेषताओं के माध्यम से खुलासा किया गया है। जिससे विषय पूरा स्पष्ट हो गया है।

मुनि श्री के सराहनीय प्रयास को कोटिश: नमन एवं पुस्तक के प्रकाशन कराने के लिए श्री माँ जिनवाणी दिगम्बर जैन पाठशाला परिवार, बबीना केन्ट को हार्दिक आभार।

प्रकाशक

चौबीस ठाणा चर्चा

(गोम्मटसार जीवकाण्ड पर आधारित)

गइ इंदिये च काये, जोगे वेये कसाय णाणे य।
संजम दंसण लेस्सा, भविया सम्मत सण्णि आहारे॥
गुण जीवा पज्जती, पाणा सण्णा य मग्गणा ओय।
उवओगो विय कमसो, वीसं तु परुवणा भणिया॥
झाणावि य पच्चावि य,जाइ य कुलकोडि संजुया सव्वे।
गहणाति जेण भणिया,कमेण चउवीस ठाणाणि॥

चौबीस स्थानों के नाम

1. गति
2. इन्द्रिय
3. काय
4. योग
5. वेद
6. कषाय
7. ज्ञान
8. संयम
9. दर्शन
10. लेश्या
11. भव्य
12. सम्यक्त्व
13. संज्ञी
14. आहारक
15. गुणस्थान
16. जीवसमास
17. पर्याप्ति
18. प्राण
19. संज्ञा
20. उपयोग
21. ध्यान
22. आस्त्रव
23. जाति
24. कुल

चौबीस ठाणा के उत्तर भेद गुणस्थानों में

मार्गणा	गुणस्थान
गति -4	
1. नरकगति	1 से 4
2. तिर्यञ्चगति	1 से 5
3. मनुष्यगति	1 से 14
4. देवगति	1 से 4
इन्द्रिय-5	
1. एकेन्द्रिय	1
2. दो इन्द्रिय	1
3. तीन इन्द्रिय	1
4. चतुरिन्द्रिय	1
5. पञ्चेन्द्रिय	1 से 14
काय -6	
1. पृथ्वीकायिक	1
2. जलकायिक	1
3. अग्निकायिक	1
4. वायुकायिक	1
5. वनस्पतिकायिक	1
6. त्रसकायिक	1 से 14
योग -15	
1. सत्य मनोयोग	1 से 13
2. असत्य मनोयोग	1 से 12
3. उभय मनोयोग	1 से 12
4. अनुभय मनोयोग	1 से 13
5. सत्य वचनयोग	1 से 13
6. असत्य वचनयोग	1 से 12
7. उभय वचनयोग	1 से 12
8. अनुभय वचनयोग	1 से 13
9. कार्माण काययोग	1, 2, 4, 13
10. औदा. मिश्र.योग	1, 2, 4, 13
11. औदा.काय योग	1 से 13
12. वैक्रि.मिश्र योग	1,2,4
13. वैक्रि.काय योग	1से 4
14. आहा. मिश्र योग	6 वाँ
15. आहा.काय योग	6 वाँ
वेद -3	
1. स्त्रीवेद	1 से 9
2. पुरुषवेद	1 से 9
3. नपुंसक वेद	1 से 9
कषाय-25	
अनंतानुबन्धी-4	
1. क्रोध	1 से 2
2. मान	1 से 2
3. माया	1 से 2
4. लोभ	1 से 2
अप्रत्याख्यानावरण-4	
5. क्रोध	1 से 4
6. मान	1 से 4
7. माया	1 से 4
8. लोभ	1 से 4

प्रत्याख्यानावरण-4

9. क्रोध	1 से 5
10. मान	1 से 5
11. माया	1 से 5
12. लोभ	1 से 5

संज्वलन -4

13. क्रोध	1 से 9
14. मान	1 से 9
15. माया	1 से 9
16. लोभ	1 से 10

अकषाय-9

17. हास्य	1 से 8
18. रति	1 से 8
19. अरति	1 से 8
20. शोक	1से 8
21. भय	1 से 8
22. जुगुप्सा	1 से 8
23. स्त्रीवेद	1 से 9
24. पुरुषवेद	1 से 9
25. नपुंसकवेद	1 से 9

ज्ञान - 8

1. कुमतिज्ञान	1 से 2
2. कुश्रुतज्ञान	1 से 2
3. कुअवधिज्ञान	1 से 2
4. मतिज्ञान	4 से 12
5. श्रुतज्ञान	4 से 12
6. अवधिज्ञान	4 से 12
7. मनःपर्ययज्ञान	6 से 12
8. केवलज्ञान	13 से 14
	एवं सिद्धों में भी

संयम - 7

1. असंयम	1 से 4
2. संयमासंयम	5 वाँ
3. सामायिक	6 से 9
4. छेदोपस्थापना	6 से 9
5. परिहार विशुद्धि	6 से 7
6. सूक्ष्मसाम्पराय	10 वाँ
7. यथाख्यात	11से 14

दर्शन - 4

1. चक्षुदर्शन	1 से 12
2. अचक्षुदर्शन	1 से 12
3. अवधिदर्शन	4 से 12
4. केवलदर्शन	13 से 14
	एवं सिद्धों में भी

लेश्या -6

1. कृष्ण लेश्या	1 से 4
2. नील लेश्या	1 से 4
3. कापोत लेश्या	1 से 4
4. पीत लेश्या	1 से 7
5. पद्म लेश्या	1 से 7
6. शुक्ल लेश्या	1 से 13

भव्य -2

1. भव्य	1 से 14
2. अभव्य	1

सम्यक्त्व -6

1. मिथ्यात्व	1
2. सासादन	2
3. सम्यग्मिथ्यात्व	3
4. उपशम	
प्रथमोपशम	4 से 7
द्वितीयोपशम	4 से 11
5. क्षयोपशम	4 से 7
6. क्षायिक	4 से 14

संज्ञी -2

1. संज्ञी	1 से 12
2. असंज्ञी	1

आहारक -2

1. आहारक	1 से 13
2. अनाहारक	1,2,4,13,14

गुणस्थान -14

1. मिथ्यात्व
2. सासादन
3. मिश्र
4. अविरत सम्यक्त्व
5. देशव्रत
6. प्रमत्तविरत
7. अप्रमत्तविरत
8. अपूर्वकरण
9. अनिवृत्तिकरण
10. सूक्ष्मसाम्पराय
11. उपशांतमोह
12. क्षीणमोह
13. सयोगकवली
14. अयोगकवली

एकीय

जीवसमास-19

1. पृथ्वीकायिकसूक्ष्म	1
2. पृथ्वीकायिकबादर	1
3. जलकायिकसूक्ष्म	1
4. जलकायिकबादर	1
5. अग्निकायिकसूक्ष्म	1
6. अग्निकायिकबादर	1
7. वायुकायिक सूक्ष्म	1
8. वायुकायिकबादर	1
9. नित्य निगोद सूक्ष्म	1
10. नित्य निगोद बादर	1
11. इतर निगोद सूक्ष्म	1
12. इतर निगोद बादर	1
13. सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति	1
14. अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति	1
15. दो इन्द्रिय जीव बादर	1
16. तीन इन्द्रिय जीव बादर	1
17. चार इन्द्रिय जीव बादर	1
18. असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव बादर	1
19. संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव बादर	1 से 14

पर्याप्ति -6

1. आहार	1 से 14

2. शरीर	1 से 14
3. इन्द्रिय	1 से 14
4. श्वासोच्छ्वास	1 से 14
5. भाषा	1 से 14
6. मन	1 से 14

प्राण -10

1 से 5 इन्द्रिय	1 से 12
भावेन्द्रिय की अपेक्षा	
6 मनोबल	1 से 12
भावमन की अपेक्षा	
7 वचनबल	1 से 13
8 कायबल	1 से 13
9 श्वासोच्छ्वास	1 से 13
10 आयु	1 से 14

संज्ञा - 4

1. आहार	1 से 6
2. भय	1 से 8
3. मैथुन	1 से 9
4. परिग्रह	1 से 10

उपयोग -12

ज्ञानोपयोग -8

1. मतिज्ञान	4 से 12
2. श्रुतज्ञान	4 से 12
3. अवधिज्ञान	4 से 12
4. मनःपर्ययज्ञान	6 से 12
5. केवलज्ञान	13,14
6. कुमतिज्ञान	1 से 2
7. कुश्रुतज्ञान	1 से 2
8. कुअवधिज्ञान	1 से 2

दर्शनोपयोग -4

9. चक्षु	1 से 12
10. अचक्षु	1 से 12
11. अवधि	4 से 12
12. केवल	13,14

ध्यान -16

आर्त ध्यान -4

1. इष्टवियोगज	1 से 6
2. अनिष्टसंयोगज	1 से 6
3. पीड़ाचिन्तन	1 से 6
4. निदानबंध	1 से 5

रौद्र ध्यान-4

5. हिंसानन्द	1 से 5
6. मृषानन्द	1 से 5
7. चौर्यानन्द	1 से 5
8. परिग्रहानन्द	1 से 5

धर्म्यध्यान-4

9. आज्ञाविचय	4 से 7
10. अपायविचय	4 से 7
11. विपाकविचय	5 से 7
12. संस्थानविचय	6 से 7

शुक्लध्यान-4

13. पृथक्त्ववितर्कवीचार	8 से 11
14. एकत्ववितर्क अवीचार	12
15. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति	13

16. व्युपरतक्रियानिवृत्ति 14

आस्त्रव -57

मिथ्यात्व-5

1. एकान्त 1
2. विनय 1
3. विपरीत 1
4. संशय 1
5. अज्ञान 1

6-20. योग 15 (पूर्वोक्त) 1 से 13

अविरति-12

21-25. 5 स्थावर की रक्षा न करना 1 से 5

26. त्रस जीव की रक्षा न करना 1 से 4

27-31. 5 इन्द्रिय वश में न करना 1 से 5

32. 1 मन को वश न करना 1 से 5

33-57. कषाय 25(पूर्वोक्त)1 से 10

जाति -84 लाख

1. 7 लाख पृथ्वीकायिक 1
2. 7 लाख जलकायिक 1
3. 7 लाख अग्निकायिक 1
4. 7 लाख वायुकायिक 1
5. 7 लाख नित्य निगोद 1
6. 7 लाख इतर निगाद 1
7. 10 लाख वनस्पतिकायिक 1
8. 2 लाख दो इन्द्रिय 1
9. 2 लाख तीन इन्द्रिय 1
10. 2 लाख चार इन्द्रिय 1
11. 4 लाख पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च 1 से 5
12. 4 लाख नरक 1 से 4
13. 4 लाख देव 1 से 4
14. 14 लाख मनुष्य 1 से 14

कुल 199.5 लाख कोटि

1. 22 लाख कोटि पृथ्वीकायिक 1
2. 7 लाख कोटि जलकायिक 1
3. 3 लाख कोटि अग्निकायिक 1
4. 7 लाख कोटि वायुकायिक 1
5. 28 लाख कोटि वनस्पतिकायिक 1
6. 7 लाख कोटि दो इन्द्रिय 1
7. 8 लाख कोटि तीन इन्द्रिय 1
8. 9 लाख कोटि चार इन्द्रिय 1
9. 12.5 लाख कोटि जलचर 1 से 5
10. 19 लाख कोटि थलचर 1 से 5
11. 12 लाख कोटि नभचर 1 से 5
12. 25 लाख कोटि नारक 1 से 4
13. 26 लाख कोटि देव 1 से 4
14. 14 लाख कोटि मनुष्य 1 से 14

चौबीस स्थान के भेद एवं उत्तरभेद की परिभाषाएँ

गति–जिस कर्म के उदय से जीव नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देवपने को प्राप्त होता है, उसे गति कहते हैं। गति की अपेक्षा जीवों का परिचय करना गति मार्गणा है। जिनमें अथवा जिनके द्वारा जीवों की खोज की जाती है, उसे मार्गणा कहते हैं। गति मार्गणा के चार भेद हैं –नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति और देवगति।

1.नरकगति – जिस कर्म का निमित्त पाकर आत्मा नारक भाव को प्राप्त होता है, उसे नरकगति कहते हैं।

2.तिर्यञ्चगति –जिस कर्म का निमित्त पाकर आत्मा तिर्यञ्च भाव को प्राप्त होता है, उसे तिर्यञ्चगति कहते हैं।

3.मनुष्यगति –जिस कर्म का निमित्त पाकर आत्मा मनुष्य भाव को प्राप्त होता है, उसे मनुष्य गति कहते हैं।

4.देवगति – जिस कर्म का निमित्त पाकर आत्मा देव भाव को प्राप्त होता है , उसे देवगति कहते हैं।

इन्द्रिय मार्गणा– एकेन्द्रियादि जाति नामकर्म के उदय से जीव की जो एकेन्द्रिय आदि अवस्था होती है, उसे इन्द्रिय कहते हैं। इन्द्रिय की अपेक्षा जीवों का परिचय करना इन्द्रिय मार्गणा है। इन्द्रिय मार्गणा के पाँच भेद हैं।
एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय।

काय मार्गणा –आत्मा की प्रवृत्ति द्वारा संचित किए गए पुद्गल पिंड को काय कहते हैं। काय की अपेक्षा जीवों का परिचय करना काय मार्गणा है। काय मार्गणा के छः भेद हैं। पृथ्वीकायिक,जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक एवं त्रसकायिक।

योग मार्गणा–काय, वचन व मन के निमित्त से होने वाले आत्मप्रदेशों के हलन–चलन को योग कहते हैं। योग की अपेक्षा जीवों का परिचय करना योग मार्गणा है।

सत्य वचनयोग, सत्य मनोयोग आदि–पदार्थ को कहने या विचारने के लिए जीव की सत्य, असत्य, उभय और अनुभय रूप चार प्रकार के वचन और

मन की जो प्रवृत्ति होती है, उसे क्रम से सत्य वचनयोग, सत्य मनोयोग आदि कहते हैं।

सत्य के विषय में होने वाली मन की प्रवृत्ति को सत्य कहते हैं। जैसे- 'यह जल है'। असत्य के विषय में होने वाली मन की प्रवृत्ति को असत्य कहते हैं। जैसे-मृगमरीचिका को जल कहना।

दोनों के विषयभूत पदार्थ को उभय कहते हैं। जैसे-कमण्डलु को घट कहना, क्योंकि कमण्डलु घट का कार्य करता है, इसलिए कथंचित् सत्य है और घटाकार नहीं है, इसलिए कथंचित् असत्य है।

जो दोनों ही सत्य और असत्य का विषय नहीं होता है ऐसे पदार्थ को अनुभय कहते हैं। जैसे-सामान्य रूप से यह प्रतिभास होना कि ''यह कुछ है'' यहाँ सत्य-असत्य का कुछ भी निर्णय नहीं हो सकता इसलिए अनुभय है। जैसे-गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से श्रावक कहें हमारे नगर में आईये ? उत्तर मिलेगा 'देखो'। यह अनुभय वचन योग है। न सत्य है और न असत्य है।

1. कार्मण काययोग - जब यह जीव मरण कर नया शरीर धारण करने के लिए विग्रह गति में जाता है तब कार्मण शरीर के निमित्त से आत्म प्रदेशों का जो परिस्पंदन होता है, उसे कार्मण काययोग कहते हैं ।

विग्रहगति के अलावा केवली भगवान् के प्रतर और लोकपूरण समुद्घात में भी कार्मण काय योग होता है ।

2. औदारिकमिश्र काययोग - औदारिक शरीर की उत्पत्ति प्रारम्भ होने के प्रथम समय से लेकर जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं कर लेता तब तक औदारिकमिश्र काययोग होता है। यहाँ वह जीव कार्माण वर्गणाओं से मिश्रित औदारिक वर्गणाओं को ग्रहण करता है।

3. औदारिक काययोग- मनुष्य और तिर्यञ्चों के शरीर को औदारिक काय कहते हैं और उसके निमित्त से जो योग होता है, उसे औदारिक काययोग कहते हैं ।

4. वैक्रियिकमिश्र काययोग- वैक्रियिक शरीर की उत्पत्ति प्रारम्भ होने के प्रथम समय से लगाकर जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं कर लेता तब तक वैक्रियिक मिश्र काययोग रहता है। इस काल में वह जीव कार्मण वर्गणाओं

से मिश्रित वैक्रियिक वर्गणाओं को ग्रहण करता है, उसे वैक्रियिकमिश्र काययोग कहते हैं।

5. वैक्रियिक काययोग –देव और नारकियों के शरीर को वैक्रियिककाय कहते हैं और उसके निमित्त से जो योग होता है, उसे वैक्रियिककाययोग कहते हैं।

6. आहारकमिश्र काययोग –आहारक शरीर की उत्पत्ति होने के प्रथम समय से लगाकर जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण न हो तब तक आहारकमिश्र काय कहलाता है एवं उसके निमित्त से जो योग होता है, उसे आहारकमिश्र काययोग कहते हैं। इस काल में वह जीव औदारिक वर्गणाओं से मिश्रित आहारक वर्गणाओं को ग्रहण करता है।

7. आहारक काययोग–छठवें गुणस्थानवर्ती मुनि के सूक्ष्म तत्त्व के विषय में जिज्ञासा होने पर उनके मस्तक से एक हाथ ऊँचा सफेद रंग का पुतला निकलता है। वह जहाँ कहीं भी केवली हों, वहाँ अपनी जिज्ञासा का समाधान करके वापस आ जाता है, इसे आहारक काय कहते हैं एवं इसके निमित्त से होने वाला योग आहारक काययोग कहलाता है।

वेद मार्गणा

''वेद्यत इति वेदः'' जो वेदा जाए, अनुभव किया जाए उसे वेद कहते हैं। वेद की अपेक्षा से जीवों का परिचय करना वेद मार्गणा है। वेद के मूलतः तीन भेद हैं। स्त्रीवेद, पुरुषवेद एवं नपुंसक वेद। द्रव्यवेद और भाववेद की अपेक्षा तीनों वेद दो प्रकार के होते हैं।

वेद नोकषाय के उदय से स्त्री की पुरुषाभिलाषा, पुरुष की स्त्री सम्बन्धी अभिलाषा और नपुंसक की उभय मुखी अभिलाषा को भाव वेद कहते हैं। तथा नामकर्म के उदय से उत्पन्न स्त्री, पुरुष और नपुंसक के बाह्य चिह्नों को द्रव्यवेद कहते हैं। पुरुषवेद तृण की आग के समान, स्त्रीवेद कंडे की आग के समान एवं नपुंसकवेद ईंट पकाने के अवा की आग के समान होता है।

विशेष–कर्मभूमि के मनुष्यों एवं तिर्यञ्चों में द्रव्यवेद व भाववेद में असमानता भी पाई जाती है। जैसे–कोई द्रव्य से पुरुष वेद है, उसके भाव से तीन में से कोई भी वेद हो सकता है। इसी प्रकार स्त्रीवेद व नपुंसकवेद में भी हो सकता है किन्तु देव, नारकी तथा भोगभूमि के मनुष्यों व तिर्यञ्चों में जैसा

द्रव्यवेद होता है वैसा ही भाववेद रहता है। एकेन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक नियम से द्रव्यवेद व भाववेद नपुंसक ही रहता है। द्रव्य से स्त्रीवेद व नपुंसकवेद वालों के गुणस्थान 1 से 5 तक हो सकते हैं।

कषाय मार्गणा

जो आत्मा के सम्यक्त्वादि गुणों का घात करें, उसे कषाय कहते हैं। इसके 25 भेद हैं –

1–4.अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ–जो आत्मा के सम्यक्त्व तथा चारित्र गुण का घात करती है ।

5–8.अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ–जो कषाय एक देश चारित्र का घात करती है।

9–12. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया,लोभ–जो कषाय सकल संयम का घात करती है।

13–16.संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ–जो कषाय यथाख्यात संयम का घात करती है।

नो कषाय – नो अर्थात् ईषत् (किंचित्) कषाय का वेदन करावे, उसे नो कषाय कहते हैं।

17. हास्य – जिसके उदय से हँसी आवे।

18. रति – जिसके उदय से क्षेत्र आदि में प्रीति हो।

19. अरति – जिसके उदय से क्षेत्र आदि में अप्रीति हो।

20. शोक – जिसके उदय से इष्ट वियोगज क्लेश उत्पन्न हो।

21. भय – जिसके उदय से भय उत्पन्न हो।

22. जुगुप्सा – जिसके उदय से ग्लानि उत्पन्न हो।

23. स्त्रीवेद – जिसके उदय से स्त्री सम्बन्धी भावों को प्राप्त हो।

24. पुरुषवेद – जिसके उदय से पुरुष सम्बन्धी भावों को प्राप्त हो।

25. नपुंसकवेद– जिसके उदय से नपुंसक सम्बन्धी भावों को प्राप्त हो।

विशेष–जहाँ अनन्तानुबन्धी कषाय है वहाँ नियम से अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण एवं संज्वलन कषाय भी रहेगी। इसी प्रकार जहाँ अप्रत्याख्यानावरण कषाय है, वहाँ प्रत्याख्यानावरण एवं संज्वलन कषाय भी

रहेगी एवं जहाँ प्रत्याख्यानावरण कषाय है, वहाँ संज्वलन कषाय भी रहेगी एवं जहाँ मात्र संज्वलन है वहाँ संज्वलन कषाय ही रहेगी। जहाँ हास्य कषाय है वहाँ रति कषाय भी रहेगी। इसी प्रकार जहाँ शोक कषाय है वहाँ अरति कषाय भी रहेगी। भय और जुगुप्सा कषाय में से कोई भी एक या दोनों या दोनों कषायों से रहित भी हो सकता है ।

ज्ञान मार्गणा

जो जानता है, वह ज्ञान है, ज्ञान की अपेक्षा से जीवों का परिचय करना ज्ञान मार्गणा है। इसके आठ भेद हैं –

1. **कुमतिज्ञान**–सम्यक्त्व के न होने पर होने वाले मतिज्ञान को कुमतिज्ञान कहते हैं।

2. **कुश्रुतज्ञान**–सम्यक्त्व के न होने पर होने वाले श्रुतज्ञान को कुश्रुतज्ञान कहते हैं।

3. **कुअवधिज्ञान**–सम्यक्त्व के न होने पर होने वाले अवधिज्ञान को कुअवधिज्ञान कहते हैं। इसका दूसरा नाम विभङ्गज्ञान भी है।

4. **मतिज्ञान** – जो ज्ञान पाँच इन्द्रिय और मन के द्वारा होता है, उसे मतिज्ञान कहते हैं।

5. **श्रुतज्ञान** – मतिज्ञान से जाने हुए पदार्थ का जो विशेष ज्ञान होता है, उसे श्रुतज्ञान कहते हैं। जैसे –''जीवः अस्ति'' ऐसा शब्द कहने पर कर्ण (श्रोत्र) इन्द्रिय रूप मतिज्ञान के द्वारा ''जीवः अस्ति'' यह शब्द ग्रहण किया। इस शब्द से जो ''जीव नामक पदार्थ है'' ऐसा ज्ञान हुआ सो श्रुतज्ञान है। यह अक्षरात्मक श्रुतज्ञान है । और जो अक्षर के निमित्त से उत्पन्न नहीं होता है, उसे अनक्षरात्मक श्रुतज्ञान कहते हैं। जैसे– शीतल पवन का स्पर्श होने पर वहाँ शीतल पवन का जानना तो मतिज्ञान है, और उस ज्ञान से वायु की प्रकृति वाले को यह पवन अनिष्ट है, ऐसा जानना श्रुतज्ञान है।

6. **अवधिज्ञान** – द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादा लिए हुए रूपी पदार्थों का इन्द्रियादिक की सहायता के बिना जो प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, वह अवधिज्ञान है।

7. **मनःपर्ययज्ञान** –इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना ही दूसरे के

मन में स्थित रूपी पदार्थों का जो प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, वह मनःपर्ययज्ञान है। मनःपर्ययज्ञान का क्षयोपशम 6 से 12 वें गुणस्थान तक रहता है किन्तु इसका प्रयोग छठवें गुणस्थान में होता है। इसके साथ प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन, आहारक काययोग, आहारकमिश्र काययोग, परिहार विशुद्धि संयम, स्त्रीवेद एवं नपुंसक वेद नहीं होता है।

8. केवलज्ञान – जो त्रिकालवर्ती समस्त द्रव्यों की अनन्त पर्यायों को एक साथ स्पष्ट रूप से जानता है, उसे केवलज्ञान कहते हैं।

संयम मार्गणा

प्राणियों और इन्द्रियों के विषय में अशुभ प्रवृत्ति का त्याग करना संयम है। संयम की अपेक्षा से जीवों का परिचय करना संयम मार्गणा है। इसके सात भेद हैं –

1. असंयम–जहाँ किसी प्रकार के संयम या संयमासंयम का अंश भी न हो, उसे असंयम कहते हैं।

2. संयमासंयम–सम्यग्दर्शन के साथ पाँचों पापों का एक देश त्याग करने को संयमासंयम कहते हैं।

3. सामायिक चारित्र –सर्वकाल में सम्पूर्ण सावद्य का त्याग करना सामायिक चारित्र है।

4. छेदोपस्थापना चारित्र – प्रमाद के निमित्त से व्रतों में दोष होने पर भली प्रकार से उसको दूर कर अपने आप को पुनः उसी में स्थापित करना छेदोपस्थापना चारित्र है।

5. परिहार विशुद्धि संयम – प्राणी वध से निवृत्ति को परिहार कहते हैं। इस युक्त शुद्धि जिस संयम में होती है, उसे परिहार विशुद्धि संयम कहते हैं। इनके शरीर से किसी भी जीव का घात नहीं होता है। इस संयम वाले मुनि तीनों सन्ध्याकालों को छोड़कर प्रतिदिन दो कोस (6 किलोमीटर) विहार करते हैं। रात्रि में विहार (गमन) नहीं करते हैं। परिहार विशुद्धि संयम के साथ आहारक काययोग, आहारकमिश्र काययोग, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, मनःपर्ययज्ञान एवं उपशम सम्यग्दर्शन नहीं रहता है।

विशेष –जो तीस वर्ष तक घर में रहकर इसके पश्चात् मुनि दीक्षा लेते

हैं और तीर्थङ्कर के पादमूल में वर्ष पृथक्त्व तक प्रत्याख्यान पूर्व का अध्ययन करते हैं, ऐसे मुनि के यह परिहार विशुद्धि संयम प्रकट होता है।

6. सूक्ष्मसाम्पराय संयम – जिस संयम में लोभ कषाय अति सूक्ष्म रह गई हो,उसे सूक्ष्म साम्पराय संयम कहते हैं।

7. यथाख्यात संयम – समस्त मोहनीय कर्म के उपशम या क्षय से जहाँ यथा अवस्थित आत्म-स्वभाव की उपलब्धि हो जाती है। उसे यथाख्यात संयम कहते हैं।

दर्शन मार्गणा

''विषय विषयि सन्निपाते सति दर्शनं भवति''। विषय और विषयी का सन्निपात होने पर ज्ञान के पूर्व जो सामान्य प्रतिभास होता है, उसे दर्शन कहते हैं। दर्शन की अपेक्षा से जीवों का परिचय करना दर्शन मार्गणा है। इसके चार भेद हैं –

1. चक्षुदर्शन – चक्षु इन्द्रिय से होने वाले ज्ञान के पहले पदार्थ का जो सामान्य प्रतिभास होता है, उसे चक्षुदर्शन कहते हैं।

2. अचक्षुदर्शन-चक्षु इन्द्रिय के बिना अन्य इन्द्रियों और मन से होने वाले ज्ञान के पूर्व पदार्थ का जो सामान्य प्रतिभास होता है, उसे अचक्षुदर्शन कहते हैं।

3. अवधिदर्शन-अवधिज्ञान के पूर्व होने वाला सामान्य प्रतिभास अवधिदर्शन है।

4. केवलदर्शन – केवलज्ञान के साथ होने वाले सामान्य प्रतिभास को केवलदर्शन कहते हैं।

लेश्या मार्गणा

''लिम्पतीति लेश्या''- जो लिम्पन करती है, उसको लेश्या कहते हैं। अर्थात् जो कर्मों से आत्मा को लिप्त करती है, उसको लेश्या कहते हैं। लेश्या की अपेक्षा से जीवों का परिचय करना लेश्या मार्गणा है । इसके छः भेद हैं –

1. कृष्ण लेश्या-तीव्र क्रोध करने वाला हो, शत्रुता को न छोड़ने वाला हो, लड़ना जिसका स्वभाव हो, धर्म और दया से रहित हो, दुष्ट हो आदि। ये सब लक्षण कृष्ण लेश्या वाले जीव के हैं।

2. नील लेश्या–आलसी, मंदबुद्धि, स्त्री लुब्धक, प्रवंचक, कातर, सदामानी आदि। ये सब नील लेश्या के लक्षण हैं।

3. कापोत लेश्या– शोकाकुल, सदारुष्ट, परनिंदक, आत्म–प्रशंसक, संग्राम में माहिर आदि कापोत लेश्या के लक्षण हैं।

4. पीत लेश्या–प्रबुद्ध (जागृत), करुणा युक्त, जो कार्य–अकार्य का विचार करने वाला हो, लाभालाभ में समता रखने वाला हो आदि। पीत लेश्या के लक्षण हैं।

5. पद्म लेश्या–दयाशील हो, त्यागी हो, भद्र हो, साधुजनों की पूजा में निरत हो, बहुत अपराध या हानि पहुँचाने वाले को भी क्षमा कर दे, आदि पद्म लेश्या के लक्षण हैं।

6. शुक्ल लेश्या–जो शत्रु के दोषों पर भी दृष्टि न देने वाला हो, जिसे पर से राग द्वेष व स्नेह न हो आदि शुक्ल लेश्या के लक्षण हैं।

भव्य मार्गणा

भव्य और अभव्य के माध्यम से जीवों का परिचय करना भव्य मार्गणा है। इसके दो भेद हैं – भव्य और अभव्य।

1. भव्य – जिसके सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र भाव प्रकट होने की योग्यता है, वह भव्य है ।

2. अभव्य – जिसके सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र भाव प्रकट होने की योग्यता नहीं है, वह अभव्य है।

सम्यक्त्व मार्गणा

सात तत्त्वों तथा सच्चे देव, शास्त्र और गुरु का यथार्थ श्रद्धान प्रकट होने पर होने वाली आत्मा की उस शुद्ध परिणति को सम्यक्त्व कहते हैं। सम्यक्त्व की अपेक्षा जीवों का परिचय करने को सम्यक्त्व मार्गणा कहते हैं। इसके छः भेद हैं –

1. मिथ्यात्व – मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से होने वाले तत्त्वार्थ के अश्रद्धान रूप परिणामों को मिथ्यात्व कहते हैं।

2. सासादन – उपशम सम्यक्त्व के काल में कम से कम एक समय और अधिक से अधिक छः आवली शेष रहने पर अनन्तानुबन्धी कषाय के चार भेदों में से किसी एक कषाय का उदय होने से उपशम सम्यक्त्व से च्युत होने पर

और मिथ्यात्व प्रकृति के उदय न होने से मध्य के काल में जो परिणाम होते हैं, उसे सासादन सम्यक्त्व कहते हैं।

3. सम्यग्मिथ्यात्व – जिसमें सम्यक् और मिथ्यारूप मिश्रित श्रद्धान पाया जाए, उसे सम्यग्मिथ्यात्व या मिश्र सम्यक्त्व कहते हैं।

4. (अ) प्रथमोपशम सम्यक्त्व[1]– दर्शन मोहनीय की मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति, सम्यक् प्रकृति और अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ इन सात प्रकृतियों के उपशम से जो सम्यक्त्व होता है, उसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व कहते हैं।

विशेष –प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ मरण नहीं होता है एवं आयुबन्ध भी नहीं होता है ।

(ब) द्वितीयोपशम सम्यक्त्व – जो क्षयोपशम सम्यक्त्व पूर्वक होता है, उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं। यह भी सात प्रकृतियों के उपशम से होता है। सप्तम गुणस्थानवर्ती मुनि यदि उपशम श्रेणी चढ़े तो उसके पास क्षायिक सम्यक्त्व या द्वितीयोपशम सम्यक्त्व आवश्यक है। अनेक आचार्यों के मतानुसार द्वितीयोपशम सम्यक्त्व चतुर्थ गुणस्थान से सप्तम गुणस्थानवर्ती क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि प्राप्त करता है।

विशेष–यह द्वितीयोपशम सम्यक्त्व ग्यारहवें गुणस्थान तक रहता है।

वहाँ अर्थात् उपशम श्रेणी में मरण हुआ तो देवगति में ही जाएगा। देवगति की अपर्याप्त अवस्था में चतुर्थ गुणस्थान में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रहेगा एवं वैक्रियिकमिश्र काययोग में ही द्वितीयोपशम सम्यक्त्व को नियम से क्षयोपशम कर लेगा। मरण नहीं हुआ तो गिरते–गिरते चतुर्थ गुणस्थान तक आ सकता है। वहाँ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रहेगा बाद में या तो क्षयोपशम कर लेगा या फिर और नीचे मिथ्यात्व में भी आ सकता है।

5.क्षयोपशम (वेदक) – अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व इन 6 प्रकृतियों के उदयाभावी क्षय व उपशम से तथा सम्यक् प्रकृति के उदय से जो सम्यक्त्व होता है, उसे क्षयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं।

---

1. **अनादि मिथ्यादृष्टि तो पाँच प्रकृतियों का उपशम करता है एवं सादि मिथ्यादृष्टि पाँच, छः या सात प्रकृतियों का उपशम करता है ।**

6. क्षायिक सम्यक्त्व – सात प्रकृतियों के क्षय से जो सम्यग्दर्शन होता है, उसे क्षायिक सम्यग्दर्शन कहते हैं।

संज्ञी मार्गणा

संज्ञी और असंज्ञी के माध्यम से जीवों के परिचय करने को संज्ञी मार्गणा कहते हैं। इसके दो भेद हैं।

1. संज्ञी–जो जीव शिक्षा, उपदेश, क्रिया और आलाप को ग्रहण करते हैं, उन्हें संज्ञी कहते हैं।

2. असंज्ञी–जो जीव शिक्षा उपदेश, क्रिया और आलाप को ग्रहण नहीं करते हैं, उन्हें असंज्ञी कहते हैं।

आहारक मार्गणा

आहारक एवं अनाहारक के माध्यम से जीवों के परिचय करने को आहारक मार्गणा कहते हैं इसके दो भेद हैं –

1. आहारक –जो तीन शरीर और छः पर्याप्तियों के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को ग्रहण करता है, उसे आहारक कहते हैं।

2. अनाहारक – तीन शरीर और छः पर्याप्तियों के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को जो ग्रहण नहीं करता है, उसे अनाहारक कहते हैं। विग्रहगति में, तेरहवें गुणस्थान के प्रतर, लोकपूरण समुद्घात में एवं चौदहवें गुणस्थान में जीव अनाहारक होता है।

विशेष–यहाँ पर आहार शब्द से कवलाहार, लेपाहार, ओजाहार, मानसिकाहार, कर्माहार को छोड़कर नोकर्माहार को ही ग्रहण करना है।

गुणस्थान

मोह और योग के निमित्त से होने वाले आत्मा के परिणाम को गुणस्थान कहते हैं। गुणस्थान चौदह होते हैं।

1. मिथ्यात्व गुणस्थान – मिथ्यात्व के उदय से जिस जीव के सात तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान नहीं होता उसका यह प्रथम गुणस्थान है।

2. सासादन गुणस्थान – उपशम सम्यक्त्व से पतित होकर जीव जब तक मिथ्यात्व गुणस्थान में नहीं आता तब तक उसे सासादन सम्यग्दृष्टि कहते हैं। इस गुणस्थान का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट से छः आवली है ।

3. सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान –जिस गुणस्थान में सम्यक् और मिथ्या रूप मिश्रित श्रद्धान पाया जाए उसे सम्यग्मिथ्यात्व या मिश्र गुणस्थान कहते हैं।

4. अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान–जहाँ सम्यग्दर्शन तो प्रकट हो गया हो किन्तु किसी भी प्रकार का व्रत (संयमासंयम या सकल संयम) न हुआ हो उसे असंयत सम्यग्दृष्टि या अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान कहते हैं।

5. देशविरत गुणस्थान – इस गुणस्थान का धारक एक ही समय में संयत और असंयत दोनों होता है। वह श्रावक त्रसहिंसा से विरत होने से संयत है और स्थावर हिंसा से विरत न होने से असंयत है, अतः उसे देशविरत या संयमासंयम गुणस्थान कहते हैं।

6. प्रमत्तविरत गुणस्थान –जहाँ सकल संयम प्रकट हो गया है किन्तु संज्वलन कषाय का तीव्र उदय होने से प्रमाद हो, उसे प्रमत्तविरत गुणस्थान कहते हैं।

7. अप्रमत्त विरत गुणस्थान – जहाँ संज्वलन कषाय का मन्द उदय हो जाने से प्रमाद नहीं रहा उस परिणाम को अप्रमत्तविरत गुणस्थान कहते हैं।

8. अपूर्वकरण गुणस्थान –इस गुणस्थान में सम-समयवर्तीं जीवों के परिणाम समान असमान दोनों होते हैं, किन्तु भिन्न समय में रहने वाले जीव के परिणाम भिन्न ही होते हैं। यहाँ मुनिराज पूर्व में कभी भी प्राप्त नहीं हुए थे, ऐसे अपूर्व परिणामों को धारण करते हैं इसलिए इस गुणस्थान का नाम अपूर्वकरण गुणस्थान है।

9. अनिवृत्तिकरण गुणस्थान–अनिवृत्तिकरण के अन्तर्मुहूर्त काल में से किसी एक समय में रहने वाले अनेक जीव जिस प्रकार शरीर के आकार आदि से परस्पर में भिन्न-भिन्न होते हैं, किन्तु उनके परिणामों में भेद नहीं पाया जाता है,उसे अनिवृत्तिकरण गुणस्थान कहते हैं।

10. सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान–जिस गुणस्थान में संज्वलन लोभ कषाय का अत्यन्त सूक्ष्म उदय होता है, उसे सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान कहते हैं।

11. उपशान्तमोह गुणस्थान –समस्त मोहनीय कर्म के उपशम से उत्पन्न होने वाले गुणस्थान को उपशांत मोह गुणस्थान कहते हैं।

12. क्षीणमोह गुणस्थान – समस्त मोहनीय कर्म के क्षय से उत्पन्न आत्मा का विशुद्ध परिणाम क्षीणमोह गुणस्थान कहलाता है।

13. सयोगकेवली गुणस्थान – चार घातिया कर्मों के क्षय हो जाने से जहाँ अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख व अनन्त वीर्य प्रकट हो जाते हैं, उन्हें केवली कहते हैं और उनके जब तक योग रहता है, तब तक उन्हें सयोग केवली कहते हैं।

14. अयोगकेवली गुणस्थान – सयोग केवली के जब योग नष्ट हो जाते हैं एवं जब तक शरीर से मुक्त नहीं होते हैं, तब तक इनको अयोग केवली कहते हैं। अयोगकेवली का काल 5 ह्रस्व अक्षर (अ,इ,उ,ऋ,ऌ) बोलने में जितना समय लगता है, उतना ही है। इनके उपान्त्य समय में 72 एवं अन्तिम समय में 13 प्रकृतियों का क्षय हो जाता है।

जीवसमास

(अ) अनन्तानन्त जीव और उनके भेद-प्रभेदों का जिनमें संग्रह किया जाए उन्हें जीवसमास कहते हैं।

(ब) जिसमें जीव भले प्रकार रहते हैं अर्थात् पाये जाते हैं, उसे जीवसमास कहते हैं।

सूक्ष्म जीव- सूक्ष्म नामकर्म के उदय से वह जीव न तो किसी को बाधा पहुँचाता है और न ही किसी से बाधित होता है, उसे सूक्ष्म जीव कहते हैं। इसका उदय मात्र एकेन्द्रिय जीवों में रहता है।

बादर जीव- बादर नामकर्म के उदय से वह जीव दूसरों को भी बाधा पहुँचाता है एवं दूसरे से बाधित भी होता है, उसे बादरजीव कहते हैं। एकेन्द्रिय में सूक्ष्म-बादर दोनों होते हैं तथा द्वीन्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय तक बादर ही होते हैं।

सूक्ष्म पृथ्वीकायिक- जिस नामकर्म के उदय से जीव सूक्ष्म पृथ्वी को ही अपना शरीर बनाते हैं, उसे सूक्ष्म पृथ्वीकायिक कहते हैं। इसी प्रकार सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक एवं सूक्ष्म वायुकायिक जानना चाहिए।

बादर पृथ्वीकायिक- जिस नामकर्म के उदय से जीव बादर पृथ्वी को ही अपना शरीर बनाते हैं, उसे बादर पृथ्वीकायिक कहते हैं। इसी प्रकार बादर जलकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर वायुकायिक जानना चाहिए।

वनस्पतिकायिक-वनस्पतिकायिक नामकर्म के उदय जो जीव वनस्पति को ही अपना शरीर बनाता है, उसे वनस्पतिकायिक कहते हैं। वनस्पति के दो भेद हैं-

1. प्रत्येक वनस्पति – जिन वनस्पतिकायिक जीवों का शरीर प्रत्येक है अर्थात् एक शरीर का स्वामी एक ही जीव है, उन्हें प्रत्येक वनस्पतिकायिक कहते हैं।

2. साधारण वनस्पति–जिन वनस्पतिकायिक जीवों का शरीर साधारण है अर्थात् एक शरीर के स्वामी अनेक जीव हैं, उन्हें साधारण वनस्पतिकायिक कहते हैं। इनको निगोदिया जीव भी कहते हैं।

प्रत्येक वनस्पति के दो भेद

1. सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति – जिस एक शरीर में जीव के मुख्य रहने पर भी उसके आश्रय से अनेक निगोदिया जीव रहें, वह सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति है।

2. अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति –जिसके आश्रय से कोई भी निगोदिया जीव न हों, वह अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति है।

साधारण वनस्पति के दो भेद हैं।

1. नित्य निगोद – जिन्होंने अनादिकाल से आज तक निगोद के अलावा कोई पर्याय प्राप्त नहीं की है, वह नित्य निगोद हैं।

2. इतर निगोद –जो नित्य निगोद से निकलकर, अन्य पर्याय प्राप्त कर पुनः निगोद में आ गए हैं, वे इतर निगोद हैं।

दो इन्द्रिय –जिसके स्पर्शन और रसना ये दो इन्द्रियाँ होती हैं, उसे दो इन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे–लट, केंचुआ, जोंक, सीप, कौड़ी,शंख आदि।

तीन इन्द्रिय–जिसके स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीन इन्द्रियाँ होती हैं, उसे तीन इन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे–चींटी, खटमल, बिच्छू, घुन, गिजाई आदि।

चार इन्द्रिय–जिसके स्पर्शन,रसना,घ्राण और चक्षु, ये चार इन्द्रियाँ होती हैं, उसे चार इन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे–भौंरा, मच्छर, टिड्डी, मधुमक्खी, मक्खी, बर्र, ततैया आदि।

असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय– जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण चक्षु और कर्ण ये पाँच इन्द्रियाँ होती हैं, किन्तु मन नहीं होता, उन्हें असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय कहते हैं। जैसे–कुछ सरीसृप एवं कुछ तोते।

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय–जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाँच इन्द्रियाँ होती हैं एवं मन भी होता है, उन्हें संज्ञी पञ्चेन्द्रिय कहते हैं। जैसे– मनुष्य, सर्प, घोड़ा, देव, नारकी आदि।

नोट – जिसके द्वारा शिक्षा व उपदेश ग्रहण किया जाता है, उसे मन कहते हैं।

पर्याप्ति का लक्षण व भेद

जन्म के प्रथम समय से पुद्गल परमाणुओं को ग्रहण कर जीवन धारण में विशेष प्रकार की पौद्गलिक शक्ति की प्राप्ति को पर्याप्ति कहते हैं। पर्याप्ति के छः भेद हैं। आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति और मनःपर्याप्ति।

1. आहार पर्याप्ति – एक शरीर को छोड़कर नवीन शरीर के साधनभूत जिन नोकर्म वर्गणाओं को जीव ग्रहण करता है । उन वर्गणाओं के परमाणुओं को ठोस (Solid) और तरल (Liquid) रूप में परिणमन (परिवर्तन) के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को आहार पर्याप्ति कहते हैं।

2. शरीर पर्याप्ति – जिन परमाणुओं को ठोस रूप परिवर्तित किया था उसको हड्डी आदि कठिन अवयव रूप और जिनको तरल रूप परिवर्तित किया था, उनको रुधिरादि रूप में परिवर्तित करने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को शरीर पर्याप्ति कहते हैं।

3. इन्द्रिय पर्याप्ति – आहार वर्गणा के परमाणुओं को इन्द्रिय आकार रूप परिवर्तित करने को तथा इन्द्रिय द्वारा विषय ग्रहण करने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को इन्द्रिय पर्याप्ति कहते हैं।

4. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति–आहार वर्गणा के परमाणुओं को श्वासोच्छ्वास रूप परिवर्तित करने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कहते हैं।

5. भाषा पर्याप्ति –भाषा वर्गणा के परमाणुओं को वचन रूप परिवर्तित करने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को भाषा पर्याप्ति कहते हैं।

6. मनःपर्याप्ति–मनोवर्गणा के परमाणुओं को हृदयस्थान में अष्ट पाखुडी के कमलाकार मन रूप परिवर्तित करने को तथा उसके द्वारा यथावत्

विचार करने के कारणभूत जीव की शक्ति की पूर्णता को मनःपर्याप्ति कहते हैं।

इन सब पर्याप्तियों में प्रत्येक का काल अन्तर्मुहूर्त है और सबका मिलाकर काल भी अन्तर्मुहूर्त ही है।

पर्याप्तक – पर्याप्त नामकर्म के उदय से युक्त जिन जीवों की सभी पर्याप्ति पूर्ण हो जाती हैं, उसे पर्याप्तक जीव कहते हैं।

विशेष – किन्हीं आचार्यों ने सभी पर्याप्ति पूर्ण होने पर पर्याप्तक कहा है। किन्हीं आचार्यों ने शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने पर पर्याप्तक कहा है।

निर्वृत्यपर्याप्तक–पर्याप्त नामकर्म के उदय से युक्त जिन जीवों की पर्याप्तियाँ प्रारम्भ हो गई हैं एवं नियम से पूर्ण होगी एवं जब तक पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती है तब तक उन्हें निर्वृत्यपर्याप्तक जीव कहते हैं।

लब्ध्यपर्याप्तक –अपर्याप्त नामकर्म के उदय से युक्त जीव, जिसने पर्याप्तियाँ प्रारम्भ की हैं, किन्तु एक भी पर्याप्ति पूर्ण नहीं करता और मरण हो जाता है, उसे लब्ध्यपर्याप्तक जीव कहते हैं। इनकी आयु श्वास के 18 वें भाग मात्र होती है।

प्राण

जिनके द्वारा जीव जीता है, उन्हें प्राण कहते हैं।

1. इन्द्रिय प्राण– द्रव्येन्द्रियों के निमित्त से उत्पन्न हुये क्षायोपशमिक भाव को इन्द्रिय प्राण कहते हैं।

2. बल प्राण– अनन्तशक्ति के एक भाग प्रमाण मन, वचन और काय के निमित्त से उत्पन्न हुए बल को बल प्राण कहते हैं।

3. आयु प्राण– जिसके उदय से भव सम्बन्धी जीवन और क्षय से मरण होता है, उसे आयु प्राण कहते हैं।

4. श्वासोच्छ्वास प्राण– शरीर से किसी भी प्रकार के वायु के आने–जाने को श्वासोच्छ्वास प्राण कहते हैं। मुख से श्वास, उच्छ्वास निकलना। रोमछिद्रों से वायु का आना–जाना। नाड़ी द्वारा संचरण होना इत्यादि।

संज्ञा

आहारादि विषयों की अभिलाषा को संज्ञा कहते हैं।

आहार संज्ञा– बहिरङ्ग में आहार के देखने से, उदररूप कोष्ठ के

खाली होने पर तथा अन्तरङ्ग में असातावेदनीय की उदीरणा होने पर आहार संज्ञा उत्पन्न होती है।

भय संज्ञा– बहिरङ्ग में अति भयानक दृश्य देखने से एवं मन में स्मरण आने से शक्ति की हीनता होने पर अन्तरङ्ग में भय कषाय की उदीरणा होने पर भय संज्ञा उत्पन्न होती है।

मैथुन संज्ञा– बहिरङ्ग में गरिष्ठ,स्वादिष्ट और रसयुक्त भोजन करने से, पूर्व भुक्त विषयों का ध्यान करने से तथा अन्तरङ्ग में वेद कषाय की उदीरणा होने पर मैथुन संज्ञा उत्पन्न होती है।

परिग्रह संज्ञा – बहिरङ्ग में भोगोपभोग सामग्री के देखने से तथा अन्तरङ्ग में लोभ कषाय की उदीरणा होने पर परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होती है।

उपयोग

चेतना की परिणति विशेष का नाम उपयोग है। चेतना सामान्य गुण है और ज्ञान दर्शन ये दो इसकी पर्याय या अवस्थाएँ हैं। इन्हीं को उपयोग कहते हैं। उपयोग दो प्रकार के हैं–

साकारोपयोग– ज्ञानोपयोग को कहते हैं।

निराकारोपयोग– दर्शनोपयोग को कहते हैं।

ध्यान

एक पदार्थ में मन को केन्द्रित करना ध्यान है। ध्यान के मूल में 4 भेद हैं–

1. आर्तध्यान –आर्तध्यान–आर्तनाम दु:ख का है। दु:खानुभव में चित्त का रुकना आर्तध्यान है, इसके चार भेद हैं–इष्ट वियोगज, अनिष्ट संयोगज, वेदनाजन्य एवं निदान।

1. इष्ट का वियोग होने पर उसकी प्राप्ति के लिए बार–बार चिन्तन करना इष्ट वियोगज आर्तध्यान है। जैसे–किसी प्रिय वस्तु को खो जाने पर उसकी प्राप्ति का निरंतर चिन्तन करना।

2. अनिष्ट का संयोग होने पर उसको दूर करने का बार–बार चिन्तन करना अनिष्ट संयोगज आर्तध्यान है। जैसे–किसी गलत किरायेदार के मिल जाने पर उसको हटाने का निरंतर चिन्तन करना।

3. शरीर में रोग की पीड़ा होने पर उसे दूर करने का बार–बार चिन्तन करना पीड़ा चिन्तन आर्तध्यान है। जैसे–कैंसर आदि हो जाने पर उसको इलाज

कराने का निरंतर चिन्तन करना।

4. आगामीकाल में सांसारिक सुखों की इच्छा करना निदान आर्तध्यान है। जैसे- इस भव में लखपति,करोड़पति बनने का तथा अगले भव में देवपर्याय प्राप्त करने का निरंतर चिन्तन करना।

2. रौद्रध्यान - क्रूर परिणामों से उत्पन्न हुए ध्यान को रौद्रध्यान कहते हैं। इसके चार भेद हैं -हिसानंद, मृषानंद, चौर्यानन्द और परिग्रहानन्द।

1. हिंसा में आनन्द मानना हिंसानंद रौद्रध्यान है।

2. झूठ बोलने में आनन्द मानना मृषानंद रौद्रध्यान है।

3. चोरी करने में आनन्द मानना चौर्यानंद रौद्रध्यान है।

4. परिग्रह के संचय व रक्षण में आनन्द मानना परिग्रहानंद रौद्रध्यान है।

3. धर्म्यध्यान -

1. शुभ विचारों में मन का स्थिर होना धर्म्यध्यान है।

2. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र को धर्म कहते हैं और उस धर्म से युक्त जो चिंतन होता है, उसे धर्म्यध्यान कहते हैं।

3. मोह तथा क्षोभ से रहित जो आत्मा का परिणाम है, वह धर्म कहलाता है। उस धर्म से उत्पन्न जो ध्यान है, उसे धर्म्यध्यान कहते हैं।

इसके चार भेद हैं-आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय एवं संस्थानविचय।

1.आज्ञाविचय -जो इन्द्रियों से दिखाई नहीं देते ऐसे बंध, मोक्ष आदि पदार्थों में जिनेन्द्र भगवान् की आज्ञा के अनुसार निश्चय कर ध्यान करना सो आज्ञाविचय धर्म्यध्यान है।

2.अपायविचय - संसार में भटकते प्राणी मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान एवं मिथ्याचारित्र से कैसे दूर हों, इस प्रकार निरंतर चिंतन करना अपाय विचय धर्म्यध्यान है, यह नारकियों को नहीं होता है, क्योंकि नारकी दूसरों का दुःख दूर हो, ऐसा सोच ही नहीं सकते।

3.विपाकविचय -(अ) कर्मों के उदय से सुख-दुःख होता है, ऐसा चिंतन करना विपाक विचय धर्म्यध्यान है। (ब) जीवों को जो एक, अनेक भव में पुण्य-पाप कर्मों का फल प्राप्त होता है, उसके उदय, उदीरणा, संक्रमण, बंध और मोक्ष का चिंतन करना विपाकविचय धर्म्यध्यान है।

4. संस्थानविचय–तीन लोक के आकार, प्रमाण आदि का चिंतन करना संस्थानविचय धर्म्यध्यान है।

4. शुक्लध्यान –मन की अत्यन्त निर्मलता होने पर जो एकाग्रता होती है, उसे शुक्लध्यान कहते हैं।

इसके चार भेद हैं–पृथक्त्ववितर्क वीचार, एकत्ववितर्क अवीचार, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति एवं व्युपरतक्रियानिवृत्ति।

1. पृथक्त्ववितर्क वीचार–पृथक्–पृथक् अर्थ, व्यञ्जन, योग की संक्रान्ति और श्रुत जिसका आधार है, वह पृथकत्ववितर्क वीचार ध्यान है।

वितर्क=श्रुतज्ञान। वीचार=संक्रान्ति। संक्रान्ति तीन प्रकार की होती है–अर्थसंक्रान्ति, व्यञ्जन संक्रान्ति एवं योग संक्रान्ति।

अर्थ संक्रान्ति–ध्यान करने योग्य पदार्थ में द्रव्य को छोड़कर उसकी पर्याय का ध्यान किया जाता है अथवा पर्याय को छोड़कर द्रव्य का ध्यान किया जाता है।

व्यञ्जन संक्रान्ति–वचन को व्यञ्जन कहते हैं। एक श्रुतवचन का आलम्बन लेकर दूसरे श्रुतवचन का आलम्बन होता है और उसे भी छोड़कर अन्य वचन का आलम्बन होना व्यञ्जन संक्रान्ति है।

योगसंक्रान्ति–मनोयोग को छोड़कर वचनयोग का ग्रहण करना उसे भी छोड़कर काययोग को ग्रहण करना योग संक्रान्ति है।

2. एकत्ववितर्क अवीचार – जो शुक्लध्यान तीन योगों में से किसी एक योग के साथ होता है तथा अर्थ, व्यञ्जन और योग की संक्रान्ति से रहित है वह एकत्ववितर्क अवीचार शुक्ल –ध्यान है।

3. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति–जब सयोग केवली भगवान् का आयुकर्म अन्तर्मुहूर्त शेष रहता है तब सब प्रकार के वचनयोग, मनोयोग और बादरकाययोग को त्यागकर मात्र सूक्ष्म काययोग रहता है तब सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति ध्यान होता है। सूक्ष्म= सूक्ष्म। क्रिया= योग। अप्रतिपाति = गिरता नहीं, अर्थात् ऊपर ही जाता है।

4. व्युपरतक्रियानिवृत्ति–वि+उपरत+क्रिया+अनिवृत्ति।

विशेष रूप से उपरत अर्थात् दूर हो गयी है, क्रिया (योग) जिसमें वह व्युपरत क्रिया है। व्युपरत क्रिया हो और अनिवृत्ति हो वह व्युपरतक्रिया निवृत्ति ध्यान है। अर्थात् योग रहित अवस्था में जो ध्यान होता है, उसे व्युपरतक्रिया निवृत्ति ध्यान कहते हैं।

आस्त्रव

कर्मों के आने के द्वार को आस्त्रव कहते हैं। इसके 57 भेद हैं –

मिथ्यात्व 5, योग 15, अविरति 12, कषाय 25

मिथ्यात्व

मिथ्यात्व प्रकृति के उदय से तत्त्वों के अश्रद्धान रूप विपरीत अभिप्राय को मिथ्यात्व कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं।

एकान्त मिथ्यात्व – अनेकान्त धर्म को न मानकर एकान्त को ही धर्म मानना जैसे–जीव नित्य ही है, जीव अनित्य ही है आदि।

विपरीत मिथ्यात्व– सपरिग्रह भी निर्ग्रन्थ हो सकता है, केवली कवलाहारी है, स्त्रीमुक्त हो सकती है आदि विपरीत अभिप्राय विपरीत मिथ्यात्व है।

संशय मिथ्यात्व– जिनेन्द्र देव के वचनों में सन्देह करना संशय मिथ्यात्व है। जैसे – सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र मोक्ष के मार्ग हैं या नहीं।

वैनयिक मिथ्यात्व– सभी देवताओं और सभी शास्त्रों में बिना विवेक के समान भाव रखना, वैनयिक मिथ्यात्व है।

अज्ञान मिथ्यात्व–हित और अहित की परीक्षा से रहित होना अज्ञान मिथ्यात्व है।

योग का वर्णन पहले हो चुका है।

अविरति – 5 इन्द्रियों तथा मन इन 6 के विषयों से विरत न होना तथा 5 स्थावर एवं त्रस इन षट्काय के जीवों की रक्षा न करना अविरति है।

कषाय का वर्णन पहले हो चुका है।

जाति– उत्पत्ति स्थान को योनि या जाति कहते हैं।

कुल– जाति के भेदों को कुल कहते हैं।

मिथ्यात्व गुणस्थान

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
3	ज्ञान	कुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु,अचक्षु
6	लेश्या	सब
2	भव्य	दोनों
1	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व सम्यक्त्व
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	दोनों
1	गुणस्थान	मिथ्यात्व
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
5	उपयोग	कुज्ञान 3, दर्शन 2
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
55	आस्त्रव	आहारक द्विक बिना
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

सासादन गुणस्थान

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
3	ज्ञान	कुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	सासादन सम्यक्त्व
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	दोनों
1	गुणस्थान	सासादन
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
5	उपयोग	कुज्ञान 3, दर्शन 2
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
50	आस्त्रव	अविरति 12, योग 13, कषाय 25
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

मिश्र गुणस्थान

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
10	योग	मन4 ,वचन4 ,औ. 1 और वैक्रि.1[1]
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
3	ज्ञान	मिश्रज्ञान[2]
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु,अचक्षु [3]
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	मिश्रसम्यक्त्व
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	मिश्र
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
5	उपयोग	मिश्रज्ञान 3, दर्शन 2
9	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 1[4]
43	आस्त्रव	योग 10, अविरति 12, कषाय 21
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

1. मिश्र गुणस्थान में मरण नहीं होता है। अतः इसमें यहाँ कार्मणकाययोग, औदारिक मिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं बनेगा।
2. कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान और कुअवधिज्ञान1 और 2 गुणस्थान में होते हैं और मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान 4 से 12 वें गुणस्थान तक होते हैं, किन्तु मिश्र गुणस्थान में दोनों से मिश्र तीन ज्ञान माने गए हैं। उदाहरण-खिचड़ी।
3. अवधिदर्शन किस गुणस्थान से प्रारम्भ होता है, इसमें आचार्यों में मतभेद है। आचार्य वीरसेन स्वामी ने प्रथम गुणस्थान से,आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने तृतीय गुणस्थान से एवं आचार्य पुष्पदन्त भूतबली ने सत् प्ररुपणा में अवधि दर्शन चतुर्थ गुणस्थान से माना है अतः उसको मुख्य मानकर तृतीय गुणस्थान में दो दर्शन चक्षुदर्शन एवं अचक्षु दर्शन लिये हैं।
4. धर्म्यध्यान भी चौथे गुणस्थान से माना है। किन्तु यहाँ मिथ्यात्व सम्यक्त्व के मिश्र परिणामों से 1 धर्म्यध्यान माना है।

अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
3	ज्ञान	सुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
1	गुणस्थान	अविरत
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
6	उपयोग	ज्ञान 3, दर्शन 3
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 2
46	आस्त्रव	योग13 , अविरति12, कषाय 21
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

देशव्रत गुणस्थान

2	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1
3	वेद	सब
17	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4, अप्रत्याख्यान 4 बिना
3	ज्ञान	सुज्ञान 3
1	संयम	संयमासंयम
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम,क्षयोपशम, क्षायिक[1]
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	देशव्रत
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
6	उपयोग	ज्ञान 3, दर्शन 3
11	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 3
37	आस्त्रव	योग 9, अविरति 11, कषाय 17
18 लाख	जाति	तिर्यञ्च 4, मनुष्य 14
57.5 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च 43.5, मनुष्य 14

1. पञ्चम गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व मात्र मनुष्य में होता है, तिर्यञ्चों में नहीं।

प्रमत्तविरत गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1, आहा. 2
3	वेद	भाव वेद 3, द्रव्य से पुरुष
13	कषाय	संज्वलन 4, हास्यादि 9
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय
3	संयम	सामायिक, छेदो., परिहारविशुद्धि
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	प्रमत्तविरत
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
7	ध्यान	आर्त 3, धर्म्य 4
24	आस्त्रव	योग 11 , कषाय 13
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

अप्रमत्तविरत गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1
3	वेद	भाव वेद 3, द्रव्य से पुरुष
13	कषाय	संज्वलन 4, हास्यादि 9
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
3	संयम	सामायिक,छेदो., परिहारविशुद्धि
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	अप्रमत्त विरत
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
3	संज्ञा	भय, मैथुन, परिग्रह
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
4	ध्यान	धर्म्य 4
22	आस्त्रव	योग 9, कषाय 13
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

अपूर्वकरण गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1
3	वेद	भाव वेद 3, द्रव्य से पुरुष
13	कषाय	संज्वलन 4, हास्यादि 9
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय
2	संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
2	सम्यक्त्व	द्वितीयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	अपूर्वकरण
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
3	संज्ञा	आहार बिना
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
1	ध्यान	पृथक्त्ववितर्क वीचार
22	आस्त्रव	योग 9, कषाय 13
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1
3	वेद	भाव वेद 3, द्रव्य से पुरुष
7	कषाय	संज्वलन 4, वेद 3
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
2	संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
2	सम्यक्त्व	द्वितीयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
2	संज्ञा	मैथुन, परिग्रह
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
1	ध्यान	पृथक्त्ववितर्क वीचार
16	आस्त्रव	योग 9, कषाय 7
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1
0	वेद	भाववेद 0, द्रव्य से पुरुष
1	कषाय	संज्वलन सूक्ष्म लोभ
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
1	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
2	सम्यक्त्व	द्वितीयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	सूक्ष्मसाम्पराय
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
1	संज्ञा	परिग्रह (सूक्ष्मलोभ)
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
1	ध्यान	पृथक्त्ववितर्क वीचार
10	आस्त्रव	योग 9, कषाय 1
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

उपशांत मोह गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1
0	वेद	भाववेद 0, द्रव्य से पुरुष
0	कषाय	0
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय
1	संयम	यथाख्यात
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
2	सम्यक्त्व	द्वितीयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	उपशांत मोह
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
0	संज्ञा	0
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
1	ध्यान	पृथक्त्ववितर्क वीचार
9	आस्त्रव	योग 9
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

क्षीणमोह गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1
0	वेद	भाववेद 0, द्रव्य से पुरुष
0	कषाय	0
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
1	संयम	यथाख्यात
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	क्षीणमोह
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
0	संज्ञा	0
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
1	ध्यान	एकत्ववितर्क अवीचार
9	आस्त्रव	योग 9
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

सयोग केवली गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
7	योग	सत्य मन वचन 2, अनु. 2, औदा.2, का.1[1]
0	वेद	भाववेद 0, द्रव्य से पुरुष
0	कषाय /1 ज्ञान	0/ केवलज्ञान
1	संयम	यथाख्यात
1	दर्शन	केवलदर्शन
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	क्षायिक
0	संज्ञी	संज्ञी असंज्ञी से रहित[2]
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
1	गुणस्थान	सयोग केवली
1	जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय[3]
6	पर्याप्ति	सब
4	प्राण	वचन, काय, श्वास., आयु[4]
0	संज्ञा/2 उपयोग	0/केवलज्ञान, केवलदर्शन
1	ध्यान	सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति
7	आस्रव	योग 7
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

1. सयोग केवली में भावमनोयोग नहीं होता है। किन्तु द्रव्यमनोयोग रहता है। अतः यहाँ दो मनोयोग लिए हैं। सयोग केवली जब समुद्घात करते हैं तब कार्मण काययोग एवं औदारिकमिश्र काययोग होता है। दण्ड समुद्घात में औदारिक काययोग, कपाट समुद्घात में औदारिकमिश्र काययोग, प्रतर समुद्घात एवं लोकपूरण समुद्घात में कार्मण काययोग रहता है। 2. केवली भगवान संज्ञी असंज्ञी से रहित हैं, क्योंकि ज्ञानावरण, दर्शनावरण कर्म से रहित होने के कारण केवली के मन के अवलम्बन से बाह्य अर्थ का ग्रहण नहीं होता है। अतः केवली को संज्ञी नहीं कह सकते, उन्हें असंज्ञी भी नहीं कह सकते हैं, क्योंकि जिन्होंने समस्त पदार्थ को साक्षात् कर लिया है, उन्हें असंज्ञी भी नहीं कह सकते हैं। 3. सयोग केवली, अयोग केवली में भावेन्द्रियाँ नहीं है तो जीवसमास क्यों लेते हैं। पञ्चेन्द्रिय जाति नामकर्म की अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय जीवसमास ग्रहण की गई है। 4. सयोग केवली में चार प्राण लिए हैं, क्योंकि क्षयोपशमात्मक भावेन्द्रिय का अभाव होने से इन्द्रिय प्राण नहीं है एवं भावमन का अभाव होने से मन प्राण भी नहीं है।

विशेष- औदारिकमिश्र काययोग एवं कार्मण काययोग में केवली के दो प्राण (कायबल और आयु) होते हैं। अथवा समुद्घात केवली के वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राणों की कारणभूत वचन और श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियाँ पायी जाती हैं, इसलिए छठवें समय में वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राण का सद्भाव हो जाता है, इसलिए औदारिकमिश्र काययोग में 4 प्राण भी होते हैं। (श्री धवला पु. 2/1/659-60)

सयोगकेवली के चार प्राणों में से वचन योग के विश्रान्त हो जाने पर 3 प्राण रहते हैं। तथा श्वासोच्छ्वास के विश्रान्त होने पर 2 प्राण रहते हैं। (जीवकाण्ड, 701)

अयोग केवली गुणस्थान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
0	योग	0
0	वेद	भाव से 0 , द्रव्य से पुरुष
0	कषाय	0
1	ज्ञान	केवलज्ञान
1	संयम	यथाख्यात
1	दर्शन	केवलदर्शन
0	लेश्या	0
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	क्षायिक
0	संज्ञी	0
1	आहारक	अनाहारक
1	गुणस्थान	अयोग केवली
1	जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
1	प्राण	आयु
0	संज्ञा	0
2	उपयोग	केवलज्ञान, केवलदर्शन
1	ध्यान	व्युपरतक्रिया निवृत्ति
0	आस्त्रव	0
14 लाख	जाति	मनुष्य सम्बन्धी
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य सम्बन्धी

नरकगति

1	गति	नरक
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, वैक्रियिक 2, कार्मण 1
1	वेद	नपुंसक
23	कषाय	स्त्री, पुरुष वेद बिना
6	ज्ञान	कुज्ञान 3, सुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
3	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत[1]
2	भव्य	भव्य दोनों
6	सम्यक्त्व	सब[2]
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
4	गुणस्थान	1से 4 पर्यन्त[3]
1	जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
9	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 1[4]
51	आस्त्रव	आहा.2, स्त्री1, पुरुष1, औदा.2 बिना
4 लाख	जाति	नरक सम्बन्धी
25 लाख कोटि	कुल	नरक सम्बन्धी

1. कौन से नरक में कौन सी लेश्या रहती है-प्रथम, द्वितीय नरक में कापोत लेश्या। तृतीय नरक में कापोत एवं नील लेश्या। चतुर्थ नरक में नील लेश्या। पञ्चम नरक में नील एवं कृष्ण लेश्या। छठवे नरक में कृष्ण लेश्या एवं सप्तम नरक में परम कृष्ण लेश्या रहती है।
2. नरकगति में क्षायिक सम्यक्त्व कैसे ? क्षायिक सम्यक्त्व कर्मभूमि का मनुष्य केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में प्राप्त करता है। यदि उसने पूर्व में नरक आयु का बन्ध कर लिया है, तो वह आयु बदलती नहीं है वहाँ जाना ही पड़ेगा, किन्तु वह प्रथम नरक से आगे नहीं जाता है।
3. सासादन गुणस्थान वाला मरण कर नरकगति में नहीं जाता है। अतः यह गुणस्थान नरकगति में पर्याप्त अवस्था में ही बनेगा। तीसरा तो पर्याप्त अवस्था में ही होता है।
4. चतुर्थ गुणस्थान में धर्म्यध्यान दो होते हैं, किन्तु नरकगति में चतुर्थ गुणस्थान होते हुए भी अपाय विचय धर्म्यध्यान नहीं क्योंकि नारकी दूसरों के दुःख दूर हो ऐसे भाव कर ही नहीं सकता है।

तिर्यञ्चगति

1	गति	तिर्यञ्च
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
11	योग	मन 4,वचन 4,औदारिक 2, कार्मण 1
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
6	ज्ञान	कुज्ञान 3, सुज्ञान 3
2	संयम	असंयम, देशसंयम
3	दर्शन	केवल दर्शन बिना
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब[1]
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
5	गुणस्थान	1 से 5 पर्यन्त
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	कुज्ञान 3, सुज्ञान 3, दर्शन 3
11	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 3
53	आस्त्रव	11 योग, 5 मिथ्या., 12 अवि., 25 कषाय
62 लाख	जाति	एकेन्द्रिय से तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय पर्यन्त
134.5 लाख कोटि	कुल	एकेन्द्रिय से तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय पर्यन्त

- तिर्यञ्चगति में क्षायिक सम्यक्त्व कैसे ?
  क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करने वाला कर्मभूमि का ही मनुष्य होता है। उसने पहले तिर्यञ्च आयु का बन्ध कर लिया तो वह तिर्यञ्च होगा, किन्तु भोगभूमि में ही होगा। कर्मभूमि में नहीं।

तिर्यञ्चगति[1]

(भोगभूमि संज्ञी पञ्चेन्द्रिय)

1	गति	तिर्यञ्च
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4,वचन 4,औदारिक 2, कार्मण 1
2	वेद	स्त्री, पुरुष
24	कषाय	नपुंसक वेद बिना
6	ज्ञान	सुज्ञान 3, कुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	केवल दर्शन बिना
6	लेश्या	अपर्याप्त में अशुभ 3, पर्याप्त में शुभ 3
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
4	गुणस्थान	1 से 4 तक
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 2
52	आस्त्रव	5 मि., 11 योग, 12 अवि., 24 कषाय
4 लाख	जाति	तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी[2]
31 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
		थभचर 19 लाख कोटि
		नभचर 12 लाख कोटि

1. भोगभूमि के तिर्यञ्चों में दो वेद स्त्री-पुरुष गुणस्थान 1 से 4 तक होते हैं। पर्याप्त अवस्था में तीन शुभ लेश्याएँ एवं अपर्याप्त अवस्था में तीन अशुभ लेश्याएँ होती हैं।
2. भोगभूमि में विकलत्रय एवं जलचर जीव नहीं होते हैं। अतः वहाँ कुल थलचर की 19 लाख कोटि एवं नभचर की 12 लाख कोटि रहेगी।

तिर्यञ्चगति

(कर्मभूमि संज्ञी पञ्चेन्द्रिय)

1	गति	तिर्यञ्च
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 2, कार्मण 1
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
6	ज्ञान	सुज्ञान 3, कुज्ञान 3
2	संयम	असंयम, देशसंयम
3	दर्शन	केवल दर्शन बिना
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
5	सम्यक्त्व	क्षायिक बिना
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
5	गुणस्थान	1से 5 तक
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
11	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 3
53	आस्त्रव	5 मि., 11 योग, 12 अविरति, 25 कषाय
4 लाख	जाति	तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
43.5 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

मनुष्यगति

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
13	योग	वैक्रियिक द्विक बिना
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
8	ज्ञान	सब
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
14	गुणस्थान	सब
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
16	ध्यान	सब
55	आस्त्रव	5 मि., 13 योग, 12 अविरति, 25 कषाय
14 लाख	जाति	मनुष्य सम्बन्धी
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य सम्बन्धी

मनुष्यगति[1]
(भोगभूमि)

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, औदा. 2 कार्मण 1
2	वेद	स्त्री, पुरुष
24	कषाय	नपुंसक के बिना
6	ज्ञान	3 कुज्ञान, 3 सुज्ञान
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	अपर्याप्त में 3 अशुभ, पर्याप्त में 3 शुभ
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
4	गुणस्थान	1-4
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 2
52	आस्त्रव	5 मि., 11 योग, 12 अविरति, 24 कषाय
14 लाख	जाति	मनुष्य सम्बन्धी
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य सम्बन्धी

1. भोगभूमि के तिर्यञ्चों के समान ही भोगभूमि के मनुष्यों में भी क्षायिक सम्यग्दर्शन, दो वेद, गुणस्थान 1-4 तक पर्याप्त अवस्था में तीन शुभ लेश्याएँ एवं अपर्याप्त अवस्था में तीन अशुभ लेश्याएँ होती हैं।

देवगति

1	गति	देवगति
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4 , वैक्रियिक 2, कार्मण 1
2	वेद	स्त्री वेद, पुरुष वेद
24	कषाय	नपुंसक वेद बिना
6	ज्ञान	कुज्ञान 3, सुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	केवल दर्शन बिना
6	लेश्या	पर्याप्त 3 अपर्याप्त 6[1]
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब[2]
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
4	गुणस्थान	1 से 4 पर्यन्त
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 2
52	आस्त्रव	औदा.2, आहा.2, नपुंसक वेद 1 बिना
4 लाख	जाति	देव सम्बन्धी
26 लाख कोटि	कुल	देव सम्बन्धी

1. देवगति में अपर्याप्त अवस्था में छः लेश्याएँ एवं पर्याप्त अवस्था में तीन शुभ लेश्याएँ होती हैं। भवनत्रिक में पर्याप्त अवस्था में एक पीत लेश्या एवं अपर्याप्त अवस्था में तीन अशुभ लेश्याएँ होती हैं एवं स्वर्गों में क्रमशः पीत, पद्म एवं शुक्ल लेश्या रहती है। पर्याप्त एवं अपर्याप्त दोनों अवस्थाओं में एक सी रहती है। 1, 2 स्वर्ग में पीत 3,4 स्वर्ग में पीत और पद्म 5 से 8 स्वर्ग तक पद्म लेश्या 9 से 12 में स्वर्ग तक पद्म एवं शुक्ल लेश्या 13 वें से 16 वें स्वर्ग एवं नवग्रैवेयक में शुक्ल लेश्या अनुदिश एवं अनुत्तर में परम शुक्ललेश्या रहती है।
2. देवगति में सभी अर्थात् 6 सम्यक्त्व होते हैं। भवनत्रिक में क्षायिक सम्यक्त्व के बिना 5 रहते हैं। प्रथम स्वर्ग से नवग्रैवेयक तक 6 रहते हैं। नव अनुदिश एवं पाँच अनुत्तरों में अपर्याप्त अवस्था में तीन द्वितीयोपशम, क्षयोपशम और क्षायिक। पर्याप्त अवस्था में क्षयोपशम और क्षायिक सम्यक्त्व होते हैं।

एकेन्द्रिय

1	गति	तिर्यञ्च
1	इन्द्रिय	एक इन्द्रिय
5	काय	त्रस बिना
3	योग	औदारिक 2, कार्मण 1
1	वेद	नपुंसक वेद
23	कषाय	स्त्री -पुरुष वेद बिना
2	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
1	संयम	असंयम
1	दर्शन	अचक्षु दर्शन
3	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
2	भव्य	भव्य, अभव्य
1	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
1	संज्ञी	असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
1	गुणस्थान	मिथ्यात्व[1]
14	जीवसमास	एकेन्द्रिय सम्बन्धी
4	पर्याप्ति	भाषा और मन बिना
4	प्राण	स्पर्शन, कायबल, आयु, श्वासोच्छ्वास
4	संज्ञा	सब
3	उपयोग	कुमति-कुश्रुत ज्ञान, अचक्षु दर्शन
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4,
38	आस्त्रव	मि.5, योग 3, अवि.7[2], कषाय 23
52 लाख	जाति	एकेन्द्रिय सम्बन्धी
67 लाख कोटि	कुल	एकेन्द्रिय सम्बन्धी

1. एक इन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक गुणस्थान प्रथम होता है। यतिवृषभ आचार्य के मतानुसार एकेन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक अपर्याप्त अवस्था में दूसरा गुणस्थान भी होता है, किन्तु यहाँ यह कथन नहीं है।
2. एकेन्द्रिय में अविरति सात होती हैं। एक इन्द्रिय को वश में नहीं करना एवं षट्काय की रक्षा नहीं करना। क्या एक इन्द्रिय भी त्रस का घात करते हैं ? अफ्रीका के वनों में एक लोम नामक पेड़ अपने निकट से गुजरने वाले जन्तुओं को पकड़कर अपना आहार बना लेता है।

दो इन्द्रिय

1	गति	तिर्यञ्च
1	इन्द्रिय	दो इन्द्रिय
1	काय	त्रस
4	योग	अनुभय वचन[1], औदारिक 2, कार्मण 1
1	वेद	नपुंसक वेद
23	कषाय	स्त्री -पुरुष वेद बिना
2	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
1	संयम	असंयम
1	दर्शन	अचक्षु दर्शन
3	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
2	भव्य	भव्य, अभव्य
1	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
1	संज्ञी	असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
1	गुणस्थान	मिथ्यात्व
1	जीवसमास	दो इन्द्रिय सम्बन्धी
5	पर्याप्ति	मन बिना
6	प्राण	स्पर्शन, रसना, कायबल, वचनबल, आयु, श्वासोच्छ्वास
4	संज्ञा	सब
3	उपयोग	कुमति-कुश्रुत ज्ञान, अचक्षु दर्शन
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
40	आस्त्रव	मि. 5, योग 4, अवि.8, कषाय 23
2 लाख	जाति	दो इन्द्रिय सम्बन्धी
7 लाख कोटि	कुल	दो इन्द्रिय सम्बन्धी

1. दो इन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक मात्र अनुभय वचनयोग रहता है।

तीन इन्द्रिय

1	गति	तिर्यञ्च
1	इन्द्रिय	तीन इन्द्रिय
1	काय	त्रस
4	योग	अनुभय वचन, औदारिक 2, कार्मण 1
1	वेद	नपुंसक वेद
23	कषाय	स्त्री-पुरुष वेद बिना
2	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
1	संयम	असंयम
1	दर्शन	अचक्षु दर्शन
3	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
2	भव्य	भव्य, अभव्य
1	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
1	संज्ञी	असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
1	गुणस्थान	मिथ्यात्व
1	जीवसमास	तीन इन्द्रिय सम्बन्धी
5	पर्याप्ति	मन बिना
7	प्राण	स्पर्शन,रसना, घ्राण इन्द्रिय, कायबल, वचनबल, आयु, श्वासोच्छ्वास
4	संज्ञा	सब
3	उपयोग	कुमति-कुश्रुतज्ञान, अचक्षु दर्शन
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
41	आस्त्रव	मि.5, योग 4, अवि.9, कषाय 23
2 लाख	जाति	तीन इन्द्रिय सम्बन्धी
8 लाख कोटि	कुल	तीन इन्द्रिय सम्बन्धी

चार इन्द्रिय

1	गति	तिर्यञ्च
1	इन्द्रिय	चार इन्द्रिय
1	काय	त्रस
4	योग	अनुभय वचन, औदारिक 2, कार्मण 1
1	वेद	नपुंसक वेद
23	कषाय	स्त्री-पुरुष वेद बिना
2	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु-अचक्षु दर्शन
3	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
2	भव्य	भव्य, अभव्य
1	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
1	संज्ञी	असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
1	गुणस्थान	मिथ्यात्व
1	जीवसमास	चार इन्द्रिय सम्बन्धी
5	पर्याप्ति	मन बिना
8	प्राण	स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कायबल, वचनबल, आयु, श्वासोच्छ्वास
4	संज्ञा	सब
4	उपयोग	कुमति-कुश्रुतज्ञान, चक्षु-अचक्षु दर्शन
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
42	आस्त्रव	मि. 5, योग 4, अवि.10, कषाय 23
2 लाख	जाति	चार इन्द्रिय सम्बन्धी
9 लाख कोटि	कुल	चार इन्द्रिय सम्बन्धी

पञ्चेन्द्रिय

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
8	ज्ञान	सब
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
14	गुणस्थान	सब
2	जीवसमास	संज्ञी-असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
16	ध्यान	सब
57	आस्रव	सब
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

त्रसकाय

4	गति	सब
4	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय जाति बिना
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
8	ज्ञान	सब
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
14	गुणस्थान	सब
5	जीवसमास	एकेन्द्रिय बिना
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
16	ध्यान	सब
57	आस्त्रव	सब
32 लाख	जाति	एकेन्द्रिय बिना
132.5 लाख कोटि	कुल	एकेन्द्रिय बिना

सत्य मन-वचन एवं अनुभय मन योग

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
1	योग/3 वेद	स्वकीय/ सब 9वें गुणस्थान तक
25	कषाय/8 ज्ञान	सब/सब
7	संयम/4 दर्शन	सब/सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
13	गुणस्थान	अयोग बिना
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
14	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 2[1]
43	आस्त्रव	मि.5, योग1, अवि.12, कषाय 25
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

1. सत्य मनोयोग वचनयोग एवं अनुभय मन वचन योग में ध्यान 14 होते हैं। जब केवली भगवान् योग निग्रह करने जाते हैं एवं आयु मात्र अन्तर्मुहूर्त शेष रहती है। जब मनोयोग और वचनयोग को नष्ट कर देते हैं एवं काययोग सूक्ष्म रह जाता है तब उन्हें तीसरा शुक्लध्यान सूक्ष्मक्रियापाती प्राप्त होता है। अतः सत्य मनोयोग, सत्यवचनयोग, अनुभय मनोयोग, अनुभय वचन योग, कार्मण काययोग, औदारिक मिश्र काययोग में तृतीय शुक्लध्यान नहीं होगा। अतः इस मार्गणा में आर्तध्यान 4, रौद्र ध्यान 4, धर्म्यध्यान 4 एवं शुक्लध्यान 2 = 14 ध्यान रहेंगे।

   विशेष-सयोग केवली बादर काययोग में स्थित होकर बादर मनोयोग और बादर वचनयोग को सूक्ष्म करते हैं। पुनः सूक्ष्म मनोयोग सूक्ष्म वचनयोग में स्थित होकर बादर काययोग को सूक्ष्म करते हैं। पश्चात् सूक्ष्म काययोग में स्थित होकर सूक्ष्म मनोयोग और सूक्ष्म वचन योग को नष्ट कर देते हैं। मात्र सूक्ष्म काययोग रहता है तब सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती ध्यान को ध्याते हैं।

अनुभय वचन योग

4	गति	सब
4	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय बिना
1	काय	त्रस
1	योग	स्वकीय
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
8	ज्ञान	सब
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	दोनों
1	आहारक	आहारक
13	गुणस्थान	अयोगकेवली बिना
5	जीवसमास	एकेन्द्रिय बिना
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
14	ध्यान	अन्त के दो शुक्लध्यान बिना
43	आस्त्रव	मि.5, योग 1, अवि.12, कषाय 25
32 लाख	जाति	एकेन्द्रिय बिना
132.5 लाख कोटि	कुल	एकेन्द्रिय बिना

असत्य व उभय मन-वचन योग

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
1	योग	स्वकीय
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
7	संयम	सब
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
12	गुणस्थान	सयोग, अयोग बिना
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	केवलज्ञान और केवलदर्शन बिना
14	ध्यान	अन्त के दो शुक्लध्यान बिना
43	आस्त्रव	मि.5, योग 1, अवि.12, कषाय 25
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

औदारिक काय योग

2	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
1	योग	औदारिक
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
8	ज्ञान	सब
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
1	आहारक	आहारक
13	गुणस्थान	अयोग बिना
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
15	ध्यान	व्युपरतक्रिया निवृत्ति बिना
43	आस्त्रव	मि.5, योग 1, अवि.12, कषाय 25
76 लाख	जाति	नारकी, देव बिना
148.5 लाख कोटि	कुल	नारकी, देव बिना

औदारिकमिश्र काय योग

2	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
1	योग	औदारिक मिश्र
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
6	ज्ञान	विभङ्गज्ञान, मनःपर्यय बिना[1]
2	संयम	असंयम, यथाख्यात
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
4	सम्यक्त्व	मिश्र और उपशम बिना[2]
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
1	आहारक	आहारक
4	गुणस्थान	1,2,4,13
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
7	प्राण	मन, वचन, श्वास. बिना
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 4
9	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 1[3]
43	आस्त्रव	मि.5, योग 1, अवि.12, कषाय 25
76 लाख	जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य सम्बन्धी
148.5 ल. को.	कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य सम्बन्धी

1. कुअवधिज्ञान के साथ मरण नहीं होता, अतः ज्ञान 6 लिये हैं।
2. सम्यग्मिथ्यात्व एवं प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ मरण नहीं होता है। इससे सम्यक्त्व 4 लिये हैं।
3. मन के अभाव में अपर्याप्त दशा में चतुर्थ गुणस्थान में एक आज्ञा विचय धर्म्यध्यान होगा। अपायविचय नहीं। अपर्याप्त अवस्था से आशय औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियिक मिश्रकाययोग, कार्मण काययोग एवं अनाहारक मार्गणा (14 वें गुणस्थान को छोड़कर)

वैक्रियिक काय योग

2	गति	नरक, देव
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
1	योग	वैक्रियिक काय
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
6	ज्ञान	सुज्ञान 3, कुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	केवल दर्शन बिना
6	लेश्या	सब[1]
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
4	गुणस्थान	1 से 4 पर्यन्त
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 2[2]
43	आस्त्रव	मि.5, योग1, अवि.12, कषाय 25
8 लाख	जाति	देव नारकी सम्बन्धी
51 लाख कोटि	कुल	देव नारकी सम्बन्धी

1. देवों में 3 शुभ लेश्याएँ एवं नारकियों में 3 अशुभ लेश्याएँ होती हैं।
2. वैक्रियिक काययोग में अपायविचय धर्म्यध्यान देवों में होता है, नारकियों में नहीं।

वैक्रियिकमिश्र काययोग

2	गति	नरक, देव
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
1	योग	वैक्रियिक मिश्र काय
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
5	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत, सुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
5	सम्यक्त्व	मिश्र बिना[1]
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
3	गुणस्थान	1,2,4
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
7	प्राण	मन, वचन, श्वास. बिना
4	संज्ञा	सब
8	उपयोग	ज्ञान 5, दर्शन 3
9	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 1
43	आस्त्रव	मि. 5, योग 1, अवि.12, कषाय 25
8 लाख	जाति	देव नारकी सम्बन्धी
51 लाख कोटि	कुल	देव नारकी सम्बन्धी

वैक्रियिक मिश्रकाययोग में उपशम सम्यक्त्व कैसे ? उपशम सम्यक्त्व के दो भेद हैं। प्रथमोपशम सम्यक्त्व, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व। प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण नहीं होता है। किन्तु द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में मरण होता है, तो यह जीव नियम से स्वर्ग ही जाता है। वहाँ अपर्याप्त अवस्था में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रहेगा। अतः वैक्रियिक मिश्रकाययोग, कार्मण काययोग एवं अनाहारक मार्गणा में जो उपशम सम्यक्त्व है, वहाँ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व ग्रहण करना है।

आहारक व आहारकमिश्र काययोग[1]

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
1	योग	स्वकीय
1	वेद	पुरुष
11	कषाय	संज्वलन 4, हास्य 6, पुरुष वेद
3	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
2	संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
2	सम्यक्त्व	क्षयोपशम,क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	प्रमत्तविरत
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10/7	प्राण	10/7
4	संज्ञा	सब
6	उपयोग	सुज्ञान 3, दर्शन 3
7	ध्यान	आर्त 3, धर्म्य 4
12	आस्त्रव	योग 1, कषाय 11
14 लाख	जाति	मनुष्य सम्बन्धी
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य सम्बन्धी

1. आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग के साथ स्त्रीवेद, नपुंसक वेद, मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धि संयम एवं उपशम सम्यक्त्व की मेचिंग नहीं है, अर्थात् ये नहीं होते हैं।

कार्मण काययोग

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
1	योग	कार्मण काययोग
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
6	ज्ञान	विभङ्गज्ञान और मन:पर्यय बिना
2	संयम	असंयम, यथाख्यात
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
5	सम्यक्त्व	मिश्र बिना
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
1	आहारक	अनाहारक
4	गुणस्थान	1, 2, 4,13
19	जीवसमास	सब
0	पर्याप्ति	0
7	प्राण	मन, वचन, श्वास. बिना
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 4
9	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 1
43	आस्त्रव	मि.5, योग1, अवि.12, कषाय 25
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

भाव नपुंसक वेद [1]

3	गति	नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
13	योग	आहारक द्विक बिना
1	वेद	नपुंसक
23	कषाय	स्त्री और पुरुष बिना
6	ज्ञान	मन:पर्यय और केवलज्ञान बिना
4	संयम	असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदो.
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
9	गुणस्थान	1 से 9
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
13	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 1
53	आस्त्रव	मि. 5, योग 13, अविरति 12, क. 23
80 लाख	जाति	नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य
173.5 लाख कोटि	कुल	नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य

1. भाव नपुंसक वेद एवं भाव स्त्री वेद के साथ आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग, मनःपर्ययज्ञान एवं परिहार विशुद्धि संयम नहीं होता है।

अ. भाव नपुंसक वेद के साथ क्षायिक सम्यक्त्व नरकगति एवं मनुष्यगति में रहेगा।

ब. भाव स्त्रीवेद के साथ क्षायिक सम्यक्त्व मात्र मनुष्यगति में रहेगा।

स. भाव पुरुष वेद के साथ क्षायिक सम्यक्त्व तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति एवं देवगति में रहेगा।

भाव स्त्री वेद

3	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
13	योग	आहारक द्विक बिना
1	वेद	स्त्री वेद
23	कषाय	पुरुष और नपुंसक बिना
6	ज्ञान	सुज्ञान 3, कुज्ञान 3
4	संयम	असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदो.
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक[1]
9	गुणस्थान	1 से 9
2	जीवसमास	संज्ञी और असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
13	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 1
53	आस्त्रव	मि. 5, अवि.12, कषाय 23, योग 13
22 लाख	जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
83.5 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव

1. भाव स्त्री वेद में अनाहारक अवस्था में प्रथम गुणस्थान, द्वितीय गुणस्थान होगा, चतुर्थ नहीं। क्योंकि कोई भी सम्यक्त्व के साथ स्त्रीवेद में उत्पन्न नहीं होता है।

भाव पुरुष वेद

3	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
1	वेद	पुरुष वेद
23	कषाय	स्त्रीवेद और नपुंसकवेद बिना
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
5	संयम	सूक्ष्म सां. और यथाख्यात बिना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
9	गुणस्थान	1 से 9
2	जीवसमास	संज्ञी और असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 7, दर्शन 3
13	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 1
55	आस्रव	स्त्री और नपुंसक बिना
22 लाख	जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
83.5 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव

अनन्तानुबन्धी चतुष्क[1]

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
13	कषाय	कषाय 4, हास्यादि 9[2]
3	ज्ञान	कुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
2	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
2	गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
5	उपयोग	कुज्ञान 3, दर्शन 2
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
43	आस्त्रव	मि. 5, योग 13, अवि.12, कषाय 13
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

1. अनन्तानुबन्धी चतुष्क का अर्थ है–अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया और लोभ इनमें से किसी एक में लगाना।
2. अनन्तानुबन्धी चतुष्क में कषाय 13 होगी, क्योंकि जहाँ अनन्तानुबन्धी क्रोध है, वहाँ नियम से अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, प्रत्याख्यानावरण क्रोध, संज्वलन क्रोध रहेगा। अतः 4 कषाय एवं 9 नोकषाय =13 रहेंगी।

अनन्तानुबन्धी रहित अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
12	कषाय	कषाय 3, हास्यादि 9[1]
6	ज्ञान	3 सुज्ञान, 3 मिश्र [2]
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
4	सम्यक्त्व	मिश्र, उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
2	गुणस्थान	3,4
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 2
37	आस्त्रव	योग 13, अवि.12, कषाय 12
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

1. अनन्तानुबन्धी रहित अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क में कषाय 12 रहेगी, क्योंकि जहाँ अप्रत्याख्यानावरण क्रोध है, वहाँ नियम से प्रत्याख्यानावरण क्रोध, संज्वलन क्रोध रहेगा। अतः 3 कषाय एवं 9 नोकषाय =12 रहेगी।
2. तीसरे गुणस्थान में 3 मिश्रज्ञान एवं चतुर्थ में 3 सुज्ञान होते हैं।

अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरण रहित प्रत्याख्यानावरण चतुष्क

2	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1
3	वेद	सब
11	कषाय	हास्यादि 9, कषाय 2[1]
3	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
1	संयम	संयमासंयम
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	देशव्रत
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
6	उपयोग	ज्ञान 3, दर्शन 3
11	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 3
31	आस्त्रव	योग 9, अवि.11, कषाय 11
18 लाख	जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य
57.5 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य

अनन्तानुबन्धी एवं अप्रत्याख्यानावरण रहित प्रत्याख्यानावरण चतुष्क में कषाय 11 रहेगी, क्योंकि जहाँ प्रत्याख्यानावरण मान है, वहाँ नियम से संज्वलन मान भी है। अतः 2 कषाय एवं 9 नोकषाय =11 रहेगी।

मात्र संज्वलन त्रिक

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1, आहारक 2
3	वेद	सब
10	कषाय	हास्यादि 9, स्वकीय कषाय 1
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
3	संयम	सामायिक, छेदो., परिहार विशुद्धि
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
4	गुणस्थान	6से 9 तक
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
8	ध्यान	आर्त 3, धर्म्य 4, शुक्ल 1
21	आस्रव	योग 11, कषाय 10
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

मात्र संज्वलन लोभ

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, औदा. 1, आहारक 2
3/0	वेद	सब[1]
10	कषाय	हास्यादि 9, सूक्ष्म लोभ 1
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय
4	संयम	सामा., छेदो., परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसां.
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
5	गुणस्थान	6 से 10 तक
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
8	ध्यान	आर्त 3, धर्म्य 4, शुक्ल 1
21	आस्त्रव	योग 11, कषाय 10
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

1. संज्वलन लोभ में वेद तीन और शून्य लिये हैं। अर्थात् 9 वे गुणस्थान तक वेद 3 एवं 10 वें गुणस्थान में वेद शून्य रहेगा।

हास्य-रति

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
15	योग	सब
3	वेद	सब
23	कषाय	क्रोधादि 16, हा. रति, भय, जु., वेद 3[1]
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
5	संयम	सूक्ष्मसां., यथाख्यात बिना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
6	लेश्या	सब
2	भव्य	दोनों
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	दोनों
8	गुणस्थान	1 से 8 तक
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 7, दर्शन 3
13	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 1
55	आस्रव	मि. 5, अवि.12, कषाय 23, योग 15
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

1. हास्य-रति में कषाय 23 हैं, क्योंकि जहाँ हास्य कषाय है, वहाँ रति तो नियम से रहेगी। एवं भय जुगुप्सा दोनों में से एक-एक या दोनों से रहित भी हो सकती हैं। अतः कषाय 16, हास्यादि 4, वेद 3 = 23 कषाय। अतः इसमें आस्रव 55 होंगे।

अरति-शोक

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
15	योग	सब
3	वेद	सब
23	कषाय	हास्य-रति बिना[1]
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
5	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात बिना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
6	लेश्या	सब
2	भव्य	दोनों
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	दोनों
8	गुणस्थान	1 से 8 तक
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 7, दर्शन 3
13	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 1
55	आस्त्रव	मि. 5, योग 15, अवि.12, कषाय 23
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

1. अरति-शोक में कषाय 23 हैं, क्योंकि जहाँ अरति है, वहाँ शोक तो नियम से रहेगा एवं भय जुगुप्सा दोनों में से एक-एक या दोनों से रहित भी हो सकती है। अतः कषाय 16, अरति आदि 4 एवं वेद 3 = 23 कषाय। अतः इसमें आस्त्रव 55 होंगे।

भय-जुगुप्सा

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब[1]
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
5	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात बिना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
6	लेश्या	सब
2	भव्य	दोनों
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	दोनों
8	गुणस्थान	1 से 8 तक
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 7, दर्शन 3
13	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 1
57	आस्त्रव	मि.5, योग 15, अवि.12, कषाय 25
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

1. भय-जुगुप्सा में कषाय 25 हैं, क्योंकि भय, जुगुप्सा के साथ हास्य-रति या अरति-शोक कोई भी युगल रह सकता है। अतः कषाय 16, हास्यादि 6, वेद 3 = 25 कषाय। अतः इसमें आस्त्रव 57 होंगे।

कुमति-कुश्रुत ज्ञान

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
1	ज्ञान	स्वकीय
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु, अचक्षु दर्शन
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
2	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
2	गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
3	उपयोग	ज्ञान स्वकीय 1, दर्शन 2
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
55	आस्त्रव	आहारक द्विक बिना
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

कुअवधि ज्ञान (विभङ्गज्ञान) ज्ञान[1]

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
10	योग	मन 4, वचन 4, औदा.1, वैक्रि.1[2]
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
1	ज्ञान	स्वकीय
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु, अचक्षु दर्शन
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
2	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
2	गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
3	उपयोग	ज्ञान 1, दर्शन 2
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4,
52	आस्त्रव	मि. 5, योग10, अवि.12, कषाय 25
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

1. कुअवधिज्ञान एवं अवधिज्ञान संज्ञी पञ्चेन्द्रिय को ही होता है।
2. विभङ्गज्ञान (कुअवधिज्ञान) के साथ मरण नहीं होता है। अतः औदारिक मिश्रकाययोग वैक्रियिक मिश्र काययोग एवं कार्मण काययोग नहीं रहेगा। अतः योग 10 लिए हैं। आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग का तो गुणस्थान ही नहीं है।

मति-श्रुत ज्ञान

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
1	ज्ञान	स्वकीय
7	संयम	सब
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु , अवधि दर्शन
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
9	गुणस्थान	4 से 12
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
4	उपयोग	ज्ञान 1, दर्शन 3
14	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 2
48	आस्रव	योग 15, अवि.12, कषाय 21
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सब
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सब

अवधिज्ञान

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
1	ज्ञान	स्वकीय
7	संयम	सब
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु , अवधि दर्शन
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
9	गुणस्थान	4 से 12
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
4	उपयोग	ज्ञान 1, दर्शन 3
14	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 2
48	आस्रव	योग 15, अवि.12, कषाय 21
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सब
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सब

मन:पर्ययज्ञान[1]

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदा.1
1	वेद	पुरुष
11	कषाय	संज्वलन 4, हास्य 6, पुरुष 1
1	ज्ञान	मन:पर्ययज्ञान
4	संयम	सामायिक, छेदो., सूक्ष्मसां., यथाख्यात
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु , अवधि दर्शन[2]
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	द्वितीयोपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
7	गुणस्थान	6 से 12
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
4	उपयोग	ज्ञान 1, दर्शन 3
9	ध्यान	आर्त 3, धर्म्य 4, शुक्ल 2
20	आस्रव	योग 9, कषाय 11
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

1. मन:पर्ययज्ञान के साथ आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग परिहारविशुद्धि संयम, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद एवं प्रथमोपशम सम्यक्त्व नहीं होता है। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रह सकता है।
2. मन:पर्ययज्ञान ईहा मतिज्ञान पूर्वक होता है, किन्तु उनके पास दर्शनों का क्षयोपशम रहता है, क्योंकि दर्शन क्षयोपशम भाव है। इसलिए तीन लिए हैं। ऐसा ही कथन धवला पुस्तक 2/1/728 में है।

नोट –मन:पर्ययज्ञान का प्रयोग छठवें गुणस्थान में होता है, क्षयोपशम 6 से 12 वें गुणस्थान तक होता है।

केवलज्ञान

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
7	योग	मन 2, वचन 2, औदा. 2, कार्मण 1
0	वेद	0
0	कषाय	0
1	ज्ञान	केवलज्ञान
1	संयम	यथाख्यात
1	दर्शन	केवल दर्शन
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	क्षायिक
0	संज्ञी	0
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
2	गुणस्थान	सयोग, अयोग केवली
1	जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
4	प्राण	वचन, काय, श्वासोच्छ्वास, आयु
0	संज्ञा	0
2	उपयोग	केवलज्ञान 1, केवलदर्शन 1
2	ध्यान	अन्त के 2 शुक्ल
7	आस्त्रव	योग 7
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

असंयम

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
6	ज्ञान	कुज्ञान 3, सुज्ञान 3[1]
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
4	गुणस्थान	1 से 4
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4,धर्म्य 2
55	आस्त्रव	मि. 5, योग13, अवि.12, कषाय 25
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

1. यहाँ गुणस्थान1,2 व 4 की अपेक्षा 6 ज्ञान लिए हैं, गुणस्थान 3 की अपेक्षा से नहीं।

संयमासंयम

2	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदा. 1,
3	वेद	सब
17	कषाय	प्रत्या.4, संज्वलन 4, नो. 9
3	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
1	संयम	संयमासंयम
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	देशव्रत
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
6	उपयोग	ज्ञान 3, दर्शन 3
11	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 3
37	आस्त्रव	योग 9, अवि.11, कषाय 17
18 लाख	जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य
57.5 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य

सामायिक, छेदोपस्थापना संयम

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, औदा.1, आ.2
3	वेद	सब
13	कषाय	संज्वलन 4, हास्यादि 9
4	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
1	संयम	स्वकीय
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
4	गुणस्थान	6 से 9
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
8	ध्यान	आर्त 3, धर्म्य 4, शुक्ल 1
24	आस्त्रव	योग 11, कषाय 13
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

परिहार विशुद्धि संयम [1]

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदा. 1
1	वेद	पुरुष
11	कषाय	संज्वलन 4, हास्यादि 6, पुरुष वेद
3	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
1	संयम	परिहारविशुद्धि संयम
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
3	लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
1	भव्य	भव्य
2	सम्यक्त्व	क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
2	गुणस्थान	प्रमत्त, अप्रमत्त
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
6	उपयोग	ज्ञान 3, दर्शन 3
7	ध्यान	आर्त 3, धर्म्य 4
20	आस्रव	योग 9, कषाय 11
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

1. परिहारविशुद्धि संयम के साथ आहारक काययोग, आहारक मिश्रकाययोग नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, मनःपर्ययज्ञान एवं उपशम सम्यक्त्व नहीं रहता है।

सूक्ष्मसाम्पराय संयम

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
9	योग	मन 4, वचन 4, औदा. 1,
0	वेद	0
1	कषाय	संज्वलन लोभ
4	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
1	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्यत्व	भव्यत्व
2	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
1	गुणस्थान	10वां
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
1	संज्ञा	परिग्रह
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
1	ध्यान	पृथक्त्ववितर्क वीचार
10	आस्त्रव	योग 9, संज्वलन कषाय
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

यथाख्यात संयम

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, औदा. 2, का. 1
0	वेद	0
0	कषाय	0
5	ज्ञान	मत्यादि 5
1	संयम	यथाख्यात
4	दर्शन	सब
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
2	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
4	गुणस्थान	11 से 14 तक
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
0	संज्ञा	0
9	उपयोग	ज्ञान 5, दर्शन 4
4	ध्यान	शुक्ल 4
11	आस्त्रव	योग 11
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

चक्षुदर्शन

4	गति	सब
2	इन्द्रिय	चार इन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना[1]
7	संयम	सब
1	दर्शन	चक्षुदर्शन
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
12	गुणस्थान	1 से 12
3	जीवसमास	चार इन्द्रिय, संज्ञी- असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
8	उपयोग	ज्ञान 7, दर्शन 1
14	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4,धर्म्य 4, शुक्ल 2
57	आस्त्रव	सब
28 लाख	जाति	चार इन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय
117.5 लाख कोटि	कुल	चार इन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय

1. चक्षुदर्शन के पश्चात् अवग्रह मतिज्ञान होता है, किन्तु शेष ज्ञानों का भी क्षयोपशम विद्यमान रहता है, इसलिए ज्ञान 7 लिए हैं। इसी प्रकार अचक्षु दर्शन एवं अवधिदर्शन के साथ लगाना चाहिए।

अचक्षुदर्शन

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
7	संयम	सब
1	दर्शन	अचक्षुदर्शन
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
12	गुणस्थान	1 से 12 तक
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
8	उपयोग	ज्ञान 7, दर्शन 1
14	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 2
57	आस्त्रव	सब
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

अवधिदर्शन

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
7	संयम	सब
1	दर्शन	अवधिदर्शन
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
3	सम्यक्त्व	उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
9	गुणस्थान	4 से 12
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
5	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 1
14	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 2
48	आस्त्रव	योग 15, अविरति 12, कषाय 21
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

केवलदर्शन

1	गति	मनुष्य
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
7	योग	मन 2, वचन 2, औ. 2, कार्मण 1
0	वेद	0
0	कषाय	0
1	ज्ञान	केवलज्ञान
1	संयम	यथाख्यात
1	दर्शन	केवलदर्शन
1	लेश्या	शुक्ल
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	क्षायिक
0	संज्ञी	0
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
2	गुणस्थान	13-14
1	जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
4	प्राण	काय, वचन, श्वास , आयु
0	संज्ञा	0
2	उपयोग	केवलज्ञान 1, केवलदर्शन 1
2	ध्यान	अन्त के 2 शुक्लध्यान
7	आस्रव	योग 7
14 लाख	जाति	मनुष्य
14 लाख कोटि	कुल	मनुष्य

कृष्ण, नील, कापोत लेश्या

4	गति	सब[1]
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
6	ज्ञान	कुज्ञान 3, सुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
1	लेश्या	स्वकीय
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब[2]
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
4	गुणस्थान	1 से 4 तक
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 3
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 2
55	आस्रव	आहारक द्विक बिना
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

1. कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में गति 4 रहेगी, क्योंकि भवनत्रिक में अपर्याप्त अवस्था में 3 अशुभ लेश्याएँ रहती हैं।
2. कृष्ण, नील, कापोत लेश्या के साथ क्षायिक सम्यक्त्व कौन-सी गति में रहेगा ? कापोत लेश्या के साथ प्रथम नरक में क्षायिक सम्यक्त्व रहता है एवं मनुष्य क्षायिक सम्यक्त्व शुभ लेश्या के साथ प्राप्त करता है किन्तु बाद में उसकी कृष्ण, नील, कापोत लेश्या भी हो सकती है। भोगभूमि के तिर्यञ्च, मनुष्यों में अपर्याप्त अवस्था में कापोत लेश्या के साथ क्षायिक सम्यक्त्व रहेगा।

पीत, पद्म लेश्या

3	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
5	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात बिना
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
1	लेश्या	स्वकीय
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी [1]
2	आहारक	दोनों
7	गुणस्थान	1 से 7 तक
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय[2]
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 7, दर्शन 3
12	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4
57	आस्त्रव	सब
22 लाख	जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
83.5 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव

1. पीत, पद्म लेश्या मात्र संज्ञी जीवों में होगी, असंज्ञी में नहीं, क्योंकि पीत, पद्म लेश्या के स्वामी संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर सप्तम गुणस्थान तक होते हैं।
2. पीत, पद्म लेश्या में जीवसमास संज्ञी पञ्चेन्द्रिय मात्र।

शुक्ल लेश्या

3	गति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
8	ज्ञान	सब
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
1	लेश्या	शुक्ल
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
13	गुणस्थान	1 से 13 तक
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
15	ध्यान	अन्त का 1 शुक्ल बिना
57	आस्त्रव	सब
22 लाख	जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
83.5 लाख कोटि	कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव

भव्य

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
8	ज्ञान	सब
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
14	गुणस्थान	सब
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
16	ध्यान	सब
57	आस्त्रव	सब
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

अभव्य

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
13	योग	आहारक द्विक बिना
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
3	ज्ञान	कुज्ञान 3
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
6	लेश्या	सब
1	भव्य	अभव्य
1	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
2	संज्ञी	दोनों
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
1	गुणस्थान	मिथ्यात्व
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
5	उपयोग	कुज्ञान 3, दर्शन 2
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
55	आस्त्रव	आहारक द्विक बिना
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

प्रथमोपशम सम्यक्त्व[1]

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
10	योग	मन 4, वचन 4, औदारिक 1, वैक्रि. 1[2]
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
3	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
4	संयम	असंयम, देश. सामा. छेदो.
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	प्रथमोपशम सम्यक्त्व
1	संज्ञी	संज्ञी
1	आहारक	आहारक
4	गुणस्थान	4 से 7 पर्यन्त
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
6	उपयोग	ज्ञान 3, दर्शन 3
12	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4
43	आस्त्रव	योग 10 , अविरति 12, कषाय 21
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

1. प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ आहारक काययोग, आहारकमिश्र काययोग, मनःपर्ययज्ञान एवं परिहार विशुद्धि संयम नहीं होते हैं।
2. प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ मरण नहीं होता है। अतः औदारिकमिश्र काययोग, वैक्रियिकमिश्र काययोग एवं कार्मण काययोग नहीं होता है।

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व[1]

2	गति	मनुष्य, देव
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
11	योग	मन 4, वचन 4, औदा.1, वै.मिश्र.1, कार्मण 1[2]
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय
6	संयम	परिहारविशुद्धि बिना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
8	गुणस्थान	4 से 11 पर्यन्त
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
13	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4, शुक्ल 1
44	आस्त्रव	योग 11, अविरति 12, कषाय 21
18 लाख	जाति	मनुष्य, देव
40 लाख कोटि	कुल	मनुष्य, देव

1. द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ आहारक काययोग, आहारक मिश्र काययोग एवं परिहार विशुद्धि संयम की मेचिंग नहीं है।
2. द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ मरण होता है। यदि मरण हुआ तो वह देवगति में ही जायेगा। वहाँ अपर्याप्त अवस्था में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व रहेगा।

क्षयोपशम सम्यक्त्व

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
4	ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय
5	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात बिना
3	दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	क्षयोपशम सम्यक्त्व
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
4	गुणस्थान	4 से 7
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
7	उपयोग	ज्ञान 4, दर्शन 3
12	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 4
48	आस्रव	योग 15, अविरति 12, कषाय 21
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

क्षायिक सम्यक्त्व

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
21	कषाय	अनन्तानुबन्धी 4 बिना
5	ज्ञान	कुज्ञान 3 बिना
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
1	भव्य	भव्य
1	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
11	गुणस्थान	4 से 14 पर्यन्त
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
9	उपयोग	सुज्ञान 5, दर्शन 4
16	ध्यान	सब
48	आस्त्रव	योग 15, अविरति 12, कषाय 21
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

संज्ञी

4	गति	सब
1	इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
1	काय	त्रस
15	योग	सब
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
7	ज्ञान	केवलज्ञान बिना
7	संयम	सब
3	दर्शन	केवलदर्शन बिना
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
1	संज्ञी	संज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
12	गुणस्थान	12 पर्यन्त
1	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 7, दर्शन 3
14	ध्यान	अन्त के 2 शुक्लध्यान बिना
57	आस्रव	सब
26 लाख	जाति	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी
108.5 लाख कोटि	कुल	पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी

असंज्ञी

1	गति	तिर्यञ्च
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
4	योग	औदा. 2, कार्मण 1, अनुभय वचन1[1]
3	वेद	सब[2]
25	कषाय	सब
2	ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
1	संयम	असंयम
2	दर्शन	चक्षु, अचक्षु
3	लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
2	भव्य	भव्य, अभव्य
1	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
1	संज्ञी	असंज्ञी
2	आहारक	आहारक, अनाहारक
1	गुणस्थान	मिथ्यात्व
18	जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्रिय बिना
5	पर्याप्ति	मन बिना
9	प्राण	मन बिना
4	संज्ञा	सब
4	उपयोग	कुज्ञान 2, दर्शन 2
8	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4
45	आस्त्रव	मि. 5, योग 4, अवि.11, कषाय 25
62 लाख	जाति	असंज्ञी तिर्यञ्च
134.5 लाख कोटि	कुल	असंज्ञी तिर्यञ्च

1. दो इन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक वचनयोग में मात्र अनुभय-वचनयोग रहता है।
2. एक इन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक मात्र नपुंसक वेद रहता है। किन्तु असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय में तीनों वेद रहते हैं।

आहारक

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
14	योग	कार्मण बिना
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
8	ज्ञान	सब
7	संयम	सब
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
6	सम्यक्त्व	सब
2	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
1	आहारक	आहारक
13	गुणस्थान	13 पर्यन्त
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब
10	प्राण	सब
4	संज्ञा	सब
12	उपयोग	सब
15	ध्यान	अन्त का शुक्ल बिना
56	आस्त्रव	कार्मण बिना
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

अनाहारक

4	गति	सब
5	इन्द्रिय	सब
6	काय	सब
1	योग	कार्मण काययोग
3	वेद	सब
25	कषाय	सब
6	ज्ञान	विभङ्गज्ञान, मनःपर्यय बिना
2	संयम	असंयम, यथाख्यात
4	दर्शन	सब
6	लेश्या	सब
2	भव्य	भव्य, अभव्य
5	सम्यक्त्व	मिश्र बिना
2	संज्ञी	दोनों
1	आहारक	अनाहारक
5	गुणस्थान	1, 2, 4, 13, 14
19	जीवसमास	सब
6	पर्याप्ति	सब[1]
7	प्राण	मन, वचन, श्वास. बिना
4	संज्ञा	सब
10	उपयोग	ज्ञान 6, दर्शन 4
10	ध्यान	आर्त 4, रौद्र 4, धर्म्य 1, शुक्ल 1[2]
43	आस्त्रव	मि. 5, योग 1, अवि. 12, कषाय 25
84 लाख	जाति	सब
199.5 लाख कोटि	कुल	सब

1. अनाहारक मार्गणा में 6 पर्याप्ति मात्र 14 वें गुणस्थान में होगी। 1, 2, 4 और 13 वें में नहीं होती है।
2. शुक्लध्यान एक क्यों ? देखें सत्यमनोयोग, वचनयोग एवं अनुभय मन वचन योग मार्गणा में।